卐 श्री सदगुरू देवाय नमः卐 卐ओ३म्卐 卐जय माता दी卐
卐 सीताराम बाबा जी卐卐जय बाबा की卐卐श्याम बाबा卐卐
卐 ! जाके सुमिरन तें रिपु नासा!! ! नाम सत्रुहन बेद प्रकासा!! 卐
उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं,यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ❀ आदाय तेनैव ददाह लंकां,नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्
मनोजवं मारुत तुल्य वेगं,जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ❀ वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं, श्रीराम दूतं शरणं प्रपद्ये

केन्द्र व उत्तरांचल सरकार से विज्ञापन मान्यता प्राप्त

हिन्दी सान्ध्य दैनिक

उत्तरांचल दर्पण

♦वर्ष 25 ♦अंक 40 ♦पृष्ठ 8 ♦रुद्रपुर(ऊधमसिंहनगर) ♦शनिवार ♦16 नवम्बर 2024 ♦मूल्य दो रूपया

darpan.rdr@gmail.com 9897427585 UTTARANCHAL DARPAN www.uttaranchaldarpan.in

GAGNEJA PROPERTIES
CONTACT FOR SALE, PURCHASE RENT & LEASE
✔ Shops ✔ Houses
✔ Industrial Property
✔ Commercial Property
✔ Agriculture Land
REAL ESTATE WITHOUT THE HASSLE
MO.-8630672525,8279444462
ADD- SRA F69, Shop No.4, Adarsh Colony, Rudrapur

हादसे में दूल्हा-दुल्हन समेत सात की मौत

हरिद्वार-काशीपुर नेशनल हाईवे पर तेज रफ्तार क्रेटा कार ने ऑटो को मारी टक्कर, दो घायल

धामपुर (उद ब्यूरो)। सड़क हादसे में दूल्हा-दुल्हन समेत सात लोगों की मौत हो गई है। जबकि दो लोग घायल हैं। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। मुख्य मंत्री योगी आदित्य नाथ ने हादसे पर दुख जताया है। जानकारी के अनुसार थाना धामपुर के हरिद्वार-काशीपुर नेशनल हाईवे पर स्थित फायर स्टेशन के पास शुक्रवार देर रात करीब 2 बजे घने कोहरे के बीच एक क्रेटा कार ने ऑटो में जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में सात लोगों की मौत हो गई, इनमें दूल्हा और

दुल्हन शामिल हैं। सभी मृतक धामपुर के गांव तीबड़ी के रहने वाले हैं। हादसे में चार पुरुष, दो महिलाएं और एक लड़की की मौत हुई है। बताया जा रहा है कि मरने वालों में दूल्हा-दुल्हन के साथ दूल्हे की मौसी, दूल्हे का भाई, ऑटो ड्राइवर समेत सात लोग शामिल हैं। बताया जाता है कि धामपुर थाना इलाके के गांव तीबड़ी निवासी खुर्शीद अंसारी अपने पुत्र 25 वर्षीय विशाल का बिहार निवासी 22 वर्षीय खुशी के साथ निकाह के मुरादाबाद आये थे। मुरादाबाद से ऑटो से अपने घर जा रहे थे। ऑटो में सात लोग सवार थे। हरिद्वार-काशीपुर नेशनल हाईवे पर स्थित फायर (शेष पृष्ठ सात पर)

कैंटर खाई में गिरा,चालक गंभीर

भवाली। कैंचीं धाम के समीप निगलाट गांव में एक वाहन खाई में गिर गया।जिसमें फंसे चालक को एस.डी.आर.एफ.टीम ने केबिन काटकर बमुश्किल सुरक्षित बाहर निकाला। चालक का उपचार चल रहा है। जानकारी के अनुसार भवाली अल्मोड़ा मार्ग में निगलाट के समीप कैंटर वाहन संख्या यूके 04सीसी 3460 शुक्रवार देर रात गहरी खाई में जा गिरा। वाहन दुर्घटनाग्रस्त होने की सूचना पुलिस को देर रात लगभग एक बजे मिली। सूचना के बाद खैरना से एस.डी.आर.एफ.की टीम अपर उप निरीक्षक रवि रावत के नेतृत्व में तत्काल मौके पर पहुंची। मौके पर पहुंचकर एस.डी.आर.एफ.को वाहन का ड्राइवर केबिन में बुरी तरह फंसा मिला, जिसे निकालने के लिए रैस्क्यू ऑपरेशन शुरू हुआ। कैंटर में फंसे चालक बागेश्वर निवासी दयाल सिंह पुत्र धाम सिंह को बचाने के लिए एस.डी.आर.एफ.ने रातभर ऑपरेशन चलाया जिसमें कैंटर के हिस्से को काटकर चालक को सुरक्षित बाहर (शेष पृष्ठ सात पर)

दुकान में आग से लाखों की क्षति

रुद्रपुर(उद संवाददाता)। ट्रांजिट कैंप रोड पर कॉस्मेटिक की दुकान में भीषण अग लगने से लाखों का माल जलकर राख हो गया। सूचना पर पहुंची दमकल विभाग की टीम ने आग को काबू किया। जानकारी के अनुसार ट्रांजिट कैम्प में चामुंडा मंदिर

से आगे ठाकुर नगर निवासी सोमपाल पुत्र त्रिलोक सिंह की कास्मेटिक की दुकान है। रोजाना की तरह वह शुक्रवार रात दुकान बंद करक घर चले गये। कुछ देर बाद पास में ठेली लगाने वाले व्यक्ति ने उन्हें बताया कि उनकी दुकान से धुआं निकल रहा है। जब दुकान में जाकर देखा दुकान में आग लगी थी। (शेष पृष्ठ सात पर)

शिक्षक को धोखे से घर बुलाकर महिला ने उतार दिये कपड़े

ब्लैकमेल कर साथियों के साथ मिलकर 3.65 लाख हड़पे

रूद्रपुर (उद संवाददाता)। काशीपुर निवासी एक व्यक्ति को महिला ने धोखे से घर बुलाकर अपने साथियों के साथ मिलकर 3.65 लाख रूपये नगदी सहित उसका सामान हड़प लेने का मामला प्रकाश में आया है। पुलिस ने तहरीर के आधार पर आरोपियों के विरूद्ध मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। दर्ज रपट में सतनाम सिंह पुत्र कश्मीर सिंह निवासी मानपुर रोड काशीपुर वार्ड 40 ने कहा है कि उसकी सोहल जरनल स्टोर किराने की दुकान है। जहां 28 अगस्त 2024 को एक महिला जिसने अपना नाम गौरी वर्मा उर्फ दमयन्ती वर्मा बताया। वह घबराई हुई थी उसने पानी पीने के लिये मांगा तो उसे पानी पिलाया गया। पानी पीकर वापस जाते समय उसने धन्यवाद किया और अपना मोबाईल नम्बर दे दिया तथा कहा कि अंकल जी जब कभी रूद्रपुर आओगे तो उससे मिलना वह रूद्रपुर में रहती है। सतनाम ने कहा कि सरकारी शिक्षक होने के नाते वह 31अगस्त को सुबह रूद्रपुर अपने साथी शिक्षक को मिलने आया था तो उसने महिला के दिये नम्बर पर काल किया । महिला ने कहा वह इन्द्रा चौक में है। इन्द्रा चौक आ जाओ । इन्द्रा चौक पर उस महिला से मिलने पर उसने कहा इतनी दूर से आये हो चाय पानी पीकर जाओ। उसकी भाभी काशीपुर रोड बसुन्धरा कालोनी में रहती है। उसके साथ उनकी भाभी के घर जाकर बैठा ही था तो उस महिला ने अपने कपड़े उतार लिये और चाकू के नोक पर उसे भी कपड़े उतारने के लिये मजबूर किया । इसी दौरान दो व्यक्ति आये और उसके साथ मार पीट करने लगे। आरोप है एक ने खुद को हाई कोर्ट का वकील नाम विवेक कुमार बाठला उर्फ विक्की बाठला बताया और दूसरे ने अपने आप को बिलासपुर क्षेत्र का प्रधान बताया। इतने में तीसरा व्यक्ति आया उसने अपने आप को एन्टी हयूमन पुलिस क्राईम से बताया और उक्त व्यक्ति ने उसे बन्धक बना लिया और उसके पास से मोबाईल, पैसा, एटीएम कार्ड आदि छीन लिया तथा जबरन मारपीट कर बन्धक बनाकर गावा चौक लेकर आये और वहाँ उसके एटीएम कार्ड से 70 हजार रूपये उसके बाद 31 अगस्त को एटीएम कार्ड से 10 हजार रूपये निकाले गये। सतनाम का आरोप है कि उसके बाद उससे 1 लाख रूपये और मांग की गई। मना करने पर उक्त लोगो ने उसके साथ मारपीट की और जान से मारने की (शेष पृष्ठ सात पर)

डॉल्फिन श्रमिकों के समर्थन में किया कलैक्ट्रेट कूच

रूद्रपुर (उद संवाददाता)। अपनी विभिन्न मांगों को लेकर पिछले कई दिनों से गांधी पार्क में आमरण अनशन कर रहे व धरना दे रहे डॉल्फिन के श्रमिकों के समर्थन में आज विभिन्न संगठनों के सैकड़ों लोगों ने गांधी पार्क से कलैक्ट्रेट कूच कर प्रधानमंत्री के नाम सम्बोधित ज्ञापन प्रेषित किया। जिसमें उनसे आन्दोलित श्रमिकों के हित में प्रदेश सरकार व उधमसिंहनगर जिला प्रशासन को आवश्यक दिशा निर्देश देने का आग्रह किया गया। इससे पूर्व सैकड़ों की संख्या में क्षेत्र के विभिन्न राजनैतिक, कर्मचारी व अन्य संगठनों से जुड़े लोग गांधी पार्क में एकत्रित हुए और उन्होंने प्रदेश सरकार, प्रशासनिक अधिकारी व फैक्ट्री प्रबंधन के खिलाफ जोरदार नारेबाजी की। डॉल्फिन कम्पनी के आन्दोलित श्रमिकों

ने कहा कि फैक्ट्री प्रबंधन पिछले कई माह से श्रमिकों का उत्पीडन करने में लगा हुआ है। श्रमिक जब न्याय के लिए आवाज उठाते हैं तो फैक्ट्री प्रबंधन श्रमिकों का शारीरिक व मानसिक उत्पीडन करने लगता है। उन्होंने कहा कि फैंक्ट्री में श्रम कानूनों को लागू करने और निकाले गये श्रमिकों को बहाल करने सहित अन्य कई मांगों को लेकर श्रमिक पिछले कई दिनों से धरना व आमरण अनशन कर रहे हैं परंतु न तो फैक्ट्री प्रबंधन उनकी आवाज सुन रहा है और न (शेष पृष्ठ सात पर)

सिरौली कला पर फैसला सच्चाई की जीत: बेहड़

किच्छा(उद संवाददाता)। सिरौली कला को नगर पालिका से अलग कर ग्राम सभा बनाए जाने के प्रकरण में उच्च न्यायालय के रोक के बाद क्षेत्रीय विधायक तिलक राज बेहड़ ने अपने कार्यालय में पत्रकार वार्ता करते हुए भाजपा की उत्तराखंड सरकार एवं सिरौली को नगर पालिका से अलग करने के लिए प्रयासरत लोगों पर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि किसी भी वर्ग विशेष के नाम पर विकास को रोकने का अधिकार किसी को नहीं है। वर्ग विशेष के खिलाफ नफरत फैलाना भी कानूनन अपराध है। उन्होंने कहा कि सिरौली को लेकर कानून ने

अपना जो फैसला सुनाया है वह संविधान सम्मत है तथा विद्वान न्यायाधीशों ने कानून के दायरे में रहते हुए तथा कानून का पालन करते हुए जो निर्णय दिया है वह जनहित में है। उन्होंने कहा कि कुछ लोग क्षेत्र का विकास करना ही नहीं चाहते हैं जिस वजह से सिरौली कला को लेकर के राजनीति खेली जा रही है। उन्होंने सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि यह सरकार की (शेष पृष्ठ सात पर)

भाजपा नेता श्रीकांत को फोन पर जान से मारने की धमकी

किच्छा(उद संवाददाता)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं

भारतीय जनता पार्टी के पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष श्रीकांत राठौर को फोन पर अज्ञात व्यक्ति द्वारा हत्या करने की धमकी दी जा रही है। भारतीय जनता पार्टी के पिछड़ा वर्ग के जिला अध्यक्ष श्रीकांत राठौर ने कोतवाली किच्छा में तहरीर देकर कहा है कि प्रातः 10:30 बजे से एक फोन नंबर से उन्हें 24 घंटे के अंदर मार देने की धमकी दी जा रही है तथा धमकी देने वाला बार-बार यह कह रहा है कि उसके द्वारा योगी आदित्यनाथ सहित तेरी हत्या करने की जिम्मेदारी ली है 24 घंटे के अंदर तुझे मौत के घाट उतार दिया जाएगा।

नानक नाम जहाज है चढ़े उतरे पार.....

श्री गुरुनानक देव जी के प्रकाश उत्सव पर निकला भव्य नगर कीर्तन

सितारगंज (उद संवाददाता)।सिख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व पर शनिवार को गुरुद्वारा श्री सिंह सभा से भव्य नगर कीर्तन श्रद्धा और उल्लास के साथ नगर में निकाला गया। जिसमें संगत ने गुरु वाणी और शबद कीर्तन के माध्यम से गुरु की महिमा का गुणगान किया और सबके भले की अरदास की। शनिवार को फूलों से सजी पालकी के समक्ष मत्था टेकते श्रद्धालु गुरुग्रंथ साहब के सामने अरदास और रागी जत्थों (शेष पृष्ठ सात पर)

लोकायुक्त की नियुक्ति नहीं चाहती सरकार!

हाईकोर्ट की फटकार के बाद नहीं हुई नियुक्ति, विपक्ष भी हुआ मौन

देहरादून(उद संवाददाता)। उत्तराखंड में एक बार फिर लोकायुक्त की नियुक्ति का मामला लटकता हुआ नजर आ रहा है। उत्तराखंड सरकार को हाईकोर्ट से मिली फटकार के बाद भी अब तक लोकायुक्त की नियुक्ति नहीं हो पाई है। हालांकि सरकार द्वारा लोकायुक्त की नियुक्ति की प्रक्रिया तो शुरू की गई थी लेकिन फिर भी मामला लटका हुआ ही है। उत्तराखंड में लोकायुक्त का मामला जहां समय-समय पर चर्चाओं में रहता है। हाईकोर्ट की फटकार के बाद सरकार के द्वारा लोकायुक्त की नियुक्ति की प्रक्रिया तो शुरू की गई लेकिन बैठक न होने से मामला लटकता हुआ नजर आ रहा है। ऐसे में सरकार और विपक्ष पर भी लोकायुक्त के गठन को लेकर गंभीर नहीं होने के आरोप लग रहे हैं। ऐसे में लोकायुक्त के चयन का मामला एक बैठक से दूसरी बैठक पर टाल दिया जा रहा है। लोकायुक्त की नियुक्ति को लेकर ना केवल सरकार बल्कि विपक्ष भी गंभारी नजर नहीं आ रहा है। लोकायुक्त चयन समिति के सदस्य नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य भी अक्सर बैठक से नदारद रहते हैं जिस कारण बैठक स्थगित कर दी जाती है। ये जानकारी आरटीआई एक्टिविस्ट एडवोकेट विकेश नेगी द्वारा आरटीआई के माध्यम से उजागर हुई। विकेश नेगी का कहना है कि हाईकोर्ट के तत्कालीन चीफ जस्टिस विपिन सांघवी और जस्टिस राकेश थपलियाल ने 27 जून 2023 को एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए प्रदेश को लोकायुक्त नियुक्त करने के आदेश दिए थे। अपने आदेश में बेंच ने कहा कि आठ सप्ताह की अवधि में ये नियुक्ति की जाए। हाईकोर्ट के आदेश के बाद प्रदेश सरकार ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की अध्यक्षता में एक चयन समिति का गठन किया। इसमें सीएम के अलावा नेता प्रतिपक्ष, विधानसभा अध्यक्ष, हाईकोर्ट के एक जज और एक अन्य सदस्य की नियुक्ति की जानी थी। पिछले डेढ़ साल में इतना ही हुआ है कि अब इस समिति में पूर्व जस्टिस एमएम घिल्डियाल को सदस्य नियुक्त किया गया है। आरटीआई एक्टिविस्ट विकेश नेगी को मिली जानकारी के अनुसार लोकायुक्त को लेकर बैठक दर बैठक होती रही और नतीजा शून्य रहा। दो बैठकों में नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य मौजूद नहीं रहे तो कोई निर्णय नहीं हो सका। गौरतलब है कि लोकायुक्त भाजपा के 2017 के चुनावी घोषणा पत्र में शामिल था। सात साल बाद भी भाजपा सरकार इस पर अमल नहीं कर पा रही है। यही नहीं लोकायुक्त में 24 कर्मचारियों की तैनाती भी की गई है। ये सभी कर्मचारी बिना काम के ही वेतन हासिल कर रहे हैं। हाईकोर्ट ने इन कर्मचारियों के कार्यों और पदों को लेकर भी सरकार से जवाब तलब किया है। विकेश नेगी इस पूरे मामले में कहना है कि वो लोकायुक्त की नियुक्ति के मामले में सरकार के खिलाफ अवमानना नोटिस डालेंगे या फिर एक नई जनहित याचिका कोर्ट में दायर करेंगे। तो वहीं लोकायुक्त की नियुक्ति को लेकर बैठकों में न पहुंचने को लेकर कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी विपक्ष पर सवाल खड़े कर रहे हैं। उनका कहना है कि विपक्ष भी लोकायुक्त के मामले को लटकाने का काम कर रहा है। तो वहीं कांग्रेस का कहना है कि सरकार चाहती नहीं है उत्तराखंड में लोकायुक्त की नियुक्ति हो इसलिए ऐसे समय पर लोकायुक्त के चयन को लेकर बैठकर रखी जाती है जिस समय नेता प्रतिपक्ष पहले से ही अपने कार्यक्रम तय कर देते हैं। हो सकता है इसलिए भी यशपाल आर्य कई बार बैठकों में नहीं पहुंचे हो।

जन प्रतिनिधियों के प्रोटोकॉल के संबंध में जारी करें एसओपी : विनोद चमोली

देहरादून(उद संवाददाता)। शुक्रवार को धर्मपुर से विधायक विनोद चमोली ने सीएम आवास में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान विधायक विनोद चमोली ने सीएम धामी से जन प्रतिनिधियों को प्रदान किए जाने वाले प्रोटोकॉल के संबंध में बातचीत की। जिसके बाद सीएम धामी ने मुख्य सचिव को जन प्रतिनिधियों के प्रोटोकॉल के संबंध में एसओपी जारी करने के निर्देश दिए हैं। धर्मपुर से विधायक विनोद चमोली ने सीएम आवास में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी

से शिष्टाचार भेंट की। विधायक चमोली ने अपने विधानसभा क्षेत्र में किए जा रहे विकास कार्यों पर मुख्यमंत्री का धन्यवाद किया। इसके साथ ही उन्होंने विभिन्न समसामयिक विषयों पर चर्चा करते हुए सरकारी कार्यक्रमों में जनप्रतिनिधियों की गरिमा के अनुकूल आमंत्रित करने, उनके प्रतिभाग करने के साथ ही बैठने के क्रम की व्यवस्था सहित प्रोटोकॉल के संबंध में एसओपी जारी किए जाने के लिए मुख्यमंत्री से आग्रह किया। विधायक विनोद चमोली के आग्रह पर सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि जन प्रतिनिधियों को प्रदान किए जाने वाले प्रोटोकॉल के संबंध में एसओपी जारी करने के लिए मुख्य सचिव को निर्देशित कर दिया गया है।

चालीस हजार से अधिक छोटे व्यापारियों को मिला पीएम स्वनिधि योजना का लाभ

देहरादून(उद संवाददाता)। सड़क किनारे रेहड़ी-ठेली लगाकर अपने आजीविका चलाने वाले हजारों छोटे कारोबारियों के लिए प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) योजना वरदान साबित हो रही है। इस योजना के तहत उत्तराखण्ड ने शत प्रतिशत लक्ष्य को प्राप्त करते हुए 40 हजार से अधिक छोटे व्यापारियों को कारोबार के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की है। प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) योजना, मुख्य रूप से कोविड काल में प्रभावित छोटे कारोबारियों को फिर से स्वरोजगार में मदद के लिए प्रांरभ की गई थी। उत्तराखण्ड में शहरी विकास विभाग इस योजना के लिए नोडल एजेंसी की भूमिका निभाता है। योजना के तहत छोटे कारोबारियों को बिना किसी गारंटी के सुगम ऋण अवधि में कार्यशील पूंजी के रुप में प्रथम चरण में 10 हजार, दूसरे चरण में 20 हजार और तीसरे चरण में 50 हजार रुपए का ऋण उपलब्ध कराया जाता है। योजना के तहत पहली बार का ऋण तय समय में लौटाने पर ही लाभार्थी दूसरी बार के लिए ऋण ले सकते हैं, इसी तरह दूसरी बार का ऋण चुकाने पर स्ट्रीट वेंडर्स तीसरे चरण का ऋण लेने के लिए अर्ह होते हैं। योजना के तहत उत्तराखण्ड ने 27330 लाभार्थियों को प्रथम चरण में 10- 10 हजार, 10349 लाभार्थियों दूसरे चरण में 20-20 हजार और 2364 लाभार्थियों को तीसरे चरण के तहत 50- 50 हजार का ऋण उपलब्ध कराया है। इस तरह भारत सरकार की ओर से दिए गए 40005 लाभार्थियों के लक्ष्य के सापेक्ष उत्तराखण्ड ने 40043 को योजना से जोड़ते हुए, कुल ₹59. 64 करोड़ का ऋण उपलब्ध कराया है।मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा से केंद्र और राज्य सरकार, हमेशा अंत्योदय को ध्यान में रखते हुए नीतियां बनाती है। इसी तरह छोटे कारोबारियों की मदद लिए पीएम स्वनिधि योजना लाई गई है, जिसके बेहतर परिणाम सामने आए हैं। योजना के लिए आवंटित लक्ष्य के सापेक्ष अधिक लोगों का लाभ पहुंचाने के लिए शहरी विकास विभाग और संबंधित नगर निकायों के अधिकारी कार्मिक बधाई के पात्र हैं।

दुकान से नगदी समेत हजारों का सामान चोरी

गदरपुर(उद संवाददाता)। एक बार फिर से क्षेत्र में चोरी की घटना सामने आई है, बीती देर रात चोरों द्वारा दिनेशपुर मोड़ पर स्थित विकास बिल्डिंग मेटेरियल के अंदर घुस चोरी की घटना को अंजाम दिया गया है। दिनेशपुर मोड़ स्थित विकास बिल्डिंग मटेरियल पर विगत वर्ष भी चोरी की घटना हो चुकी है वही देर रात फिर अज्ञात चोरो द्वारा विकास बिल्डिंग मटेरियल के अंदर घुस कर गेट का ताला तोड़कर करीब 2700 रुपए की नगदी व जरूरी दस्तावेज, आधार कार्ड और सीसीटीवी कैमरे का डीपीआर चोरी कर ले गए हैं। बता दें दिनेशपुर मोड पर ही पुलिस के कुछ जवान ड्यूटी पर रहते हैं बावजूद इसके चोरो के हौसले इतने बुलंद हो गए हैं कि उन्हें पुलिस का भी कोई खौफ नजर नहीं आता वहीं इसमें पुलिस की भी नाकामयाबी सामने आ रही है क्योंकि कुछ माह पूर्व गदरपुर थाने के करीब ही मुख्य मार्ग पर एक मोबाइल की दुकान पर भी चोरी की घटना हुई थी जिसमे टीन शेड को काटकर अज्ञात

चोरों द्वारा हजारों रुपए कीमत के मोबाइल चोरी कर लिए गए थे लेकिन कई माह बीत जाने पर भी पुलिस द्वारा अभी तक घटना का कोई खुलासा नहीं किया गया है। विकास बिल्डिंग मटेरियल के स्वामी विकास बजाज द्वारा बताया गया कि आज सुबह जैसे ही वह अपने दुकान खोलने के लिए गए दुकान के बाहर का गेट जैसे ही खोला उनके होश उड़ गए क्योंकि उनके ऑफिस के गेट का ताला अंदर से टूटा हुआ था और ऑफिस का सामान बिखरा हुआ नजर आया, गनीमत रही की दुकान पर ज्यादा रुपए नहीं थे।

वाहन खाई में गिरने से पिता पुत्री की मौत

चमोली(उद संवाददाता)।प्रदेश के पर्वतीर्य क्षेत्रों में वाहन दुघर्टनाओं का दौर जारी है। नंदानगर क्षेत्र में शुक्रवार सुबह वाहन दुर्घटनाग्रस्त होने से पिता-पुत्री की मौत हो गई। एक घायल को एयर एंबुलेंस से एम्स ऋषिकेश ले जाया जा रहा है। वाहन में चालक सहित चार लोग सवार थे। सुबह करीब 11 बजे नंदानगर क्षेत्र के सुतोल-पेरी सड़क पर एक दुर्घटनाग्रस्त होकर करीब 200 मीटर गहरी खाई में जा गिरा। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। स्थानीय लोगों व पुलिस की मदद से घायलों को बाहर निकाला। दुर्घटना में भरत सिंह (42) पुत्र सौण्या सिंह निवासी सुतोल की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि उनकी पुत्री सपना (17), प्रताप सिंह (26) पुत्र आलम सिंह ग्राम सुतोल घायल हो गए। दोनों को ग्रामीणों व पुलिस की मदद से सीएचसी नंदानगर लाया गया, जहां उपचार के दोरान सपना की भी मौत हो गई। वाहन

चालक गोविंद सिंह पुत्र आलम सिंह निवासी सुतोल वाहन से छिटक गया, उन्हें हल्की चोटें आई हैं। गंभीर घायल प्रताप सिंह को एयर एंबुलेंस से एम्स ऋषिकेश रेफर कर दिया गया है। दुर्घटना का करण वाहन का स्टेयरिंग लॉक होना बताया जा रहा है। वाहन दुर्घटना में पिता-पुत्री की मौत से सुतोल गांव में मातम छा गया है। दोनों पिता-पुत्री अपने काम से नंदानगर आ रहे थे। लेकिन पेरी गांव के पास वाहन दुर्घटनाग्रस्त होने पर दोनों की मौत हो गई। दुर्घटना की सूचना पर सुतोल गांव के साथ ही पूरे नंदानगर में तामत छा गया है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

देहरादून सड़क हादसे में चार दिन बाद मुकदमा दर्ज

देहरादून(उद संवाददाता)। देहरादून में 12 नवंबर को हुए हुए भयानक सड़क हादसे मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है। हादसे में घायल युवक के पिता ने कैंट कोतवाली में तहरीर दी है। जिसके बाद मामले में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। देहरादून एक्सीडेंट मामले में चार दिन बाद मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। विपिन कुमार अग्रवाल पुत्र स्वर्गीय हरिशंकर अग्रवाल निवासी 8 राजपुर रोड देहरादून द्वारा 12 नवंबर को उनके बेटे सिद्धेश व उसके दोस्तों की इनोवा कार की टक्कर कालागढ़ चौक पर एक कंटेनर से हुई। जिसमें उनके पुत्र के 6 दोस्तों की मृत्यु होने व उनके पुत्र को गंभीर चोट आने के संबंध में कोतवाली कैंट में तहरीर दी गई। तहरीर के आधार पर कोतवाली कैंट पर मुकदमा अपराध संख्या 226/24 धारा 106 (2)

बीएनएस पंजीकृत कर लिया गया है। बता दें कि 12 नवंबर को हुआ ये हादसा इतना भयानक था कि इसमें छह युवाओं की मौके पर ही मौत हो गई। इस हादसे में एक युवक घायल हो गया था। जिसका अस्पताल में इलाज चल रहा है। हादसे में कुणाल कुकरेजा, कामाक्षी सिंघल, गुनीत कौर, ऋषभ जैन, नव्या गोयल और अतुल अग्रवाल की मौत हो गई थी। जबकि सिद्धेश अग्रवाल गंभीर रूप से घायल हो गया।

ट्रक की टक्कर से ऑटो चालक की मौत

देहरादून। राजधानी देहरादून में हादसों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। एक बार फिर से दर्दनाक हादसा हुआ है। रिस्पना पुल के पास एक ट्रक ने ऑटो को टक्कर मार दी। इस हादसे में एक ऑटो चालक की मौके पर ही मौत हो गई। देहरादून में गुरूवार देर रात दर्दनाक हादसा हो गया। रिस्पना पुल के पास नेहरू कॉलोनी क्षेत्र के अंतर्गत आंचल डेयरी के पास ट्रक और ऑटो की आमने-सामने की टक्कर हो गई। इस हादसे में ऑटो चालक की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने आरोपी ट्रक चालक को गिरफ्तार कर लिया है। मिली जानकारी के मुताबिक गुरूवार देर रात एक ट्रक रिस्पना पुल से देहरादून शहर की ओर आ रहा था। इसी दौरान एक ऑटो बैक होकर अपनी दिशा में जा रहा था। इसी दौरान दोनों की टक्कर हो गई। इस हादसे में ऑटो चालक की मौके पर ही मौत हो गई। घटना की जानकारी पर पुलिस मौके पर पहुंची और ट्रक चालक को गिरफ्तार किया। इसके साथ ही शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

पिकप वाहन की टक्कर से हाईवे पार कर रहे युवक की मौत

रुद्रपुर(उद संवाददाता)। किच्छा हाईवे पैदल पार कर रहे एक व्यक्ति को तेज रफ्तार पिकअप ने टक्कर मार दी। हादसे में घायल व्यक्ति को इलाज के लिए जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां उसको मृत घोषित कर दिया गया। जानकारी के अनुसार शुक्रवार देर शाम भूतबंगला तिराहे के पास गांधी कॉलोनी निवासी महिपाल (45) पैदल किच्छा रोड पार कर रहा था। इसी बीच पिकअप ने उसे टक्कर मार दी। बताया जा रहा है कि टक्कर लगने के बाद महिपाल हवा में उछलकर सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर रंपुरा चौकी इंचार्ज गणेश भट्ट टीम के साथ मौके पर पहुंचे। उन्होंने चीता कर्मियों के साथ गंभीर रूप से घायल महिपाल को जिला अस्पताल भेजा था। जांच के बाद डॉक्टर ने महिपाल को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने चालक सहित वाहन को कब्जे में ले लिया है। पुलिस के अनुसार शव को मोर्चरी में रखवा दिया गया है और शनिवार को उसका पोस्टमार्टम होगा। महिपाल नगर निगम में संविदा कर्मी बताया जा रहा है।

प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान का भव्य शुभारंभ

जनपद में प्रधानमंत्री जन मन योजना के अंतर्गत 115 आवास स्वीकृत,लाभार्थियों को किया सम्मानित

नैनीताल(उद संवाददाता)। आदिवासी गौरव दिवस पर बरसा मुंडा की 150 वीं जयंती को जनजाति गौरव दिवस समारोह के रूप में मनाया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम-जनमन) का भगवान बिरसा मुंडा की जयंती (जनजाति गौरव दिवस) पर बिहार से शुभारंभ किया। इस योजना में 11 महत्वपूर्ण हस्तक्षेपों पर ध्यान केंद्रित किया गया है जिसके माध्यम से विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) के जीवन स्तर में सुधार करने और उनके विकास के लिए 24हजार करोड़ रुपए समर्पित किए गए हैं। इस योजना के तहत अगले तीन वर्षों में, 18 राज्यों और 01 केंद्र शासित प्रदेश में लागू किया जाएगा। प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महा अभियान, जिसे पीएम जनमन के नाम से भी जाना जाता है, आदिवासी समुदायों के लिए शुरू की गई एक महत्वपूर्ण पहल है। इस अभियान का उद्देश्य आदिवासी समुदायों के अधिकारों की रक्षा करना, उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार करना, और उन्हें मुख्यधारा में लाना है। इस अभियान के तहत कई योजनाएं और कार्यक्रम शुरू किए गए हैं, जिनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, और आर्थिक विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है। इसके अलावा, इस अभियान में आदिवासी समुदायों की संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण और प्रसार भी शामिल है। कुछ प्रमुख योजनाएं और कार्यक्रम जो पीएम जनमन के तहत शुरू किए गए हैं: आदिवासी शिक्षा योजना: आदिवासी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए विशेष स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना करना। आदिवासी स्वास्थ्य योजना: आदिवासी समुदायों में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए विशेष अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना करना। आदिवासी रोजगार योजना: आदिवासी युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना। आदिवासी संस्कृति संरक्षण योजना: आदिवासी संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण और प्रसार करने के लिए विशेष कार्यक्रमों का आयोजन करना। सबको पक्का घर, हर घर नल से जल, गांव-गांव तक सड़क ,हर घर तक बिजली, कौशल विकास, अच्छी शिक्षा, अच्छा स्वास्थ्य, अच्छा पोषण, कनेक्टिविटी, मुक्त राशन आदि अन्य योजनाओं का से लाभान्वित किया जाएगा। रामनगर विधायक दीवान सिंह विष्ट ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम जनमन) मिशन भी आदिवासी जनजाति के विकास में कारगर साबित होगा। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि देश के माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संकल्प अन्तिम छोर पर कड़े व्यक्ति को भी सभी योजनाओं का लाभ अनिवार्य रूप से मिले जो कि आज नि:संदेह सफल हो रहा है। कार्यक्रम के आयोजन और कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी अधिकारी, कर्मचारी और अतिथिगणों का आभार व्यक्त किया। जिला पंचायत अध्यक्ष बेला तोलिया ने अपने संविधान में देश के यशस्वी प्रधानमंत्री के कर्तव्य, कार्यनिष्ठा और राष्ट्रीय हित में उनके फसलों की सराहना की। उन्होंने कहा माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश आज बहुआयामी क्षेत्र में विकास कर रहा है। उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जन्म जयंती पर अपने विचार व्यक्त किया और कार्यक्रम में आए सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया। जीजीआईसी, रामनगर की छात्राओं ने वंदना गीत और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। प्रधानमंत्री जन मन योजना के अंतर्गत 115 आवास स्वीकृत हुए 91 आवास बनकर पूर्ण हो गए जिसमे से 20 आवास लाभार्थियों को सम्मानित किया गया, स्वास्थ्य विभाग द्वारा 10 आयुष्मान कार्ड व 5 सिकल सेल कार्ड के लाभार्थियों को सम्मानित किया गय, सहकारिता विभाग द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय योजना के अंतर्गत 10 लाभार्थियों को चेक वितरण, इंडियन बैंक पीरूमदारा द्वारा 05 लाभार्थियों को चेक वितरण, विद्युत विभाग द्वारा 05 लाभार्थियों को विद्युत कनेक्शन देकर सम्मानित, कृषि विभाग द्वारा 15 लाभार्थियों को चेक वितरण करके सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के माध्यम सेएनडीसीबी द्वारासीसीएल के चैक रोशनी समूह को 1.5 लाख, सत्यम समूह को 1.6 लाख, कृष्णा समूह को 1,6 लाख, माही समूह को 1.5 लाख कितना से वितरित की। बिरसा मुंडा जयंती पर पीएम नरेंद्र मोदी ने आदिवासी समुदाय के लिए महत्वपूर्ण संदेश दिया है। उन्होंने आदिवासी समुदाय के अधिकारों की रक्षा करने, उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार करने, उन्हें मुख्यधारा में लाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता व्यक्त की है। पीएम मोदी ने आदिवासी समुदाय की संस्कृति और परंपराओं का सम्मान करने और उनके विकास के लिए काम करने का वादा किया है। उन्होंने आदिवासी युवाओं को शिक्षा और रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए विशेष योजनाएं शुरू करने की घोषणा की है । इसके अलावा, पीएम मोदी ने आदिवासी समुदाय के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने और उनके लिए विशेष अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना करने की योजना बनाई है। आदिवासी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए विशेष स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना करना। आदिवासी समुदायों में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए विशेष अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना करना। आदिवासी युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना। आदिवासी समाज का भारत की पुरानी चिकित्सा पद्धति में बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष बेला टोलिया, रामनगर विधायक दीवान सिंह बिष्ट, ब्लॉक प्रमुख रेखा रावत,ज्येष्ठ ब्लॉक प्रमुख, कनिष्ठ ब्लॉक प्रमुख व गणमान्य नजनता सहित मुख्य विकास अधिकारी, जिला विकास अधिकारी, जिला समाज कल्याण अधिकारी, कृषि स्वास्थ्य व अन्य संबद्ध विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

नौवीं और दसवीं के विद्यार्थियों को मिलेगी पीएम यशस्वी प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति

अल्मोड़ा(उद संवाददाता)।जिला समाज कल्याण अधिकारी आराधना त्रिपाठी ने बताया कि शासन/निदेशालय समाज कल्याण उत्तराखण्ड से प्राप्त निर्देशों के अनुपालन में सभी सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 09 व कक्षा 10 के छात्र/छात्राओं हेतु वित्तीय वर्ष 2024-25 में पीएम यशस्वी प्री-मैट्रिक ओबीसी एवं ईबीसी नवीन छात्रवृत्ति योजना भारत सरकार द्वारा प्रथम बार लागू की गयी है। उन्होंने बताया कि पीएम यशस्वी गाईडलाईन के अनुसार केवल शासकीय विद्यालयों में कक्षा 09 व कक्षा 10 में अध्ययनरत् अन्य पिछड़ी जाति एवं सामान्य जाति के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के वह छात्र/छात्रायें छात्रवृत्ति के लिए पात्र होंगे जिनके अभिवावक की वार्षिक आय रू0 2.50 लाख रू0 से कम हो को प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजनान्तर्गत लाभान्वित किये जाने का प्राविधान किया गया है। उन्होंने सभी शासकीय शैक्षणिक संस्थानों के संस्थाध्यक्षों से अनुरोध है कि सरकारी शैक्षणिक संस्थानों में अध्ययनरत उक्त वर्ग के पात्र छात्र/छात्राओं को भारत सरकार द्वारा लागू नवीन पीएम यशस्वी छात्रवृत्ति योजनान्तर्गत राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल पर अधिक से अधिक आवेदन किये जाने के सम्बन्ध में अवगत करायेंगे।

ट्रांजिट कैम्प क्षेत्र से बालक लापता

रूद्रपुर (उद संवाददाता)। ट्रांजिट कैम्प क्षेत्र से विगत दिवस एक बालक संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गया । परिजनों ने इसकी जानकारी थाना पुलिस को दे दी है। मूल रूप से ग्राम खेड़ा रठ, पोस्ट खेड़ा, बझेड़ा खेरारठ शाहजहांपुर निवासी हाल निवासी ट्रांजिट कैम्प राम नरेश ने बताया कि उसका 12 वर्षीय पुत्र आशीष गत 11 नवम्बर को दोपहर घर के बाहर खेल रहा था। लेकिन सायं काल तक वह घर वापस नहीं लौटा। जिस पर उसकी सभी सम्भावित स्थानों व रिश्तेदारी में खोजबीन की गई लेकिन उसका कहीं कोई पता नहीं चला। आज तक उसका पुत्र आशीष घर नहीं लौटा है। जिससे सभी को उसकी चिंता सता रही है। रामनरेश ने सभी से अपने पुत्र की खोजबीन में मदद की गुहार लगाई है।

चिराग अली शाह बाबा के उर्स का आगाज

हल्द्वानी (उद संवाददाता)। लाइन नंबर 18 स्थित दरगाह चिराग अली शाह बाबा का132 व उर्स आगाज हो चुका है। उसमें झूले से लेकर खेल खिलौने सहित मीना बाजार की दुकानें सजी हैं। इतना ही नहीं इस उर्स में हलवा पराठा के साथ साथ मनोरंजन के लिए काला जादू व अन्य खेलों के स्टाल भी लगे हैं । उर्स में दूर दराज से आए कव्वाल अपने फन से लोगों का मनमोह लेंगे। दरगाह कमेटी के अध्यक्ष नियाज अहमद खान ने बताया कि उर्स में दुर्धरा से आए मेहमान भी शिरकत करेंगे। उर्स 10 दिन तक चलेगा और उसका कुल शरीफ 11वें दिन होगा। उर्स में नाते पाक, कुरान खुआनी, चादरपोशी भी की जाएगी। उन्होंने बताया कि कवाल रामपुर, बरेली, मुरादाबाद, संभल, पीलीभीत आदि शहरों से आ रहे हैं। नियाज अहमद ने बताया कि दरगाह पर हर रोज लंगर का इंतजाम भी किया गया है।

डिवाइन सोलर सॉल्यूशन का मीना ने किया उद्घाटन

रुद्रपुर(उद संवाददाता)। छतरपुर डैम पर डिवाइन सोलर सॉल्यूशन का, उत्तराखंड प्रदेश महिला कांग्रेस कमेटी की वरिष्ठ उपाध्यक्ष मीना शर्मा ने फीता काटकर उद्घाटन किया ।इससे पूर्व ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष दिनेश पंत के आवास पर अखंड श्री रामायण का पाठ रखा गया था, शुक्रवार को श्री रामचरित मानस रामायण का भोग डाला गया,और उसके बाद विशाल भंडारे का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर कांग्रेस नेत्री श्रीमती शर्मा, पूर्व प्रधान विजय यादव सहित अन्य अतिथियों ने डिवाइन सोलर सॉल्यूशन का फीता काटकर उद्घाटन किया स इस अवसर पर डिवाइन सोलर सॉल्यूशन के प्रबंध निदेशक गोपेश दुमका ने कहा कि प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत सोलर पावर प्लांट लगाए जाएंगे, जिसमें 1,36,800 रुपए की सब्सिडी भी मिलेगी स इस अवसर पर श्रीमती शर्मा ने दिनेश पंत और गोपेश दुमका को डिवाइन सोलर सॉल्यूशन के प्रारंभ होने पर उन्हें शुभकामनाएं दी, और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की स इस अवसर पर पूर्व प्रधान विजय यादव, सहित मुन्नी पंत,गीता दुमका, नीमा पांडे,पूर्व प्रधान प्रेम सिंह, लावण्या शर्मा,सुभाष गिरी, भुवन चंदोला, मुकेश चतुर्वेदी, अनिल शर्मा, सहित बड़ी संख्या में अन्य लोग उपस्थित थे ।

निर्माणाधीन मकान से हजारों का सामान उड़ाया

हल्द्वानी (उद संवाददाता)। अज्ञात चोरों ने मुखानी थाना क्षेत्र में एक निर्माणाधीन मकान से कटर मशीन सहित हजारों रुपए कीमत का अन्य सामान चोरी कर लिया। भवन स्वामी ने मामले की रपट दर्ज करा दी है। बाराही बिहार कमल्वगंजा निवासी संजय लोहनी पुत्र दीप चंद्र लोहनी ने पुलिस को सौंपी तहरीर में कहा है कि उसके मकान में काम करने वाले मिस्त्री दीपावली की छुट्टी में अपने घर गए थे। जब वह छुट्टी से वापस आए तो मकान में रखें दो कटर मशीन, छेनी हथोड़ा आदि सामान वहां से चोरी हो गया था। उसने मकान में लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज देखी तो कमरे में एक व्यक्ति 1 नवंबर को मकान के अंदर जाते हुए दिखाई दिया और कटर व अन्य सामान वापस लेकर आता दिखाई दिया। भवन स्वामी ने अज्ञात चोरों के खिलाफ मुखानी थाना पुलिस को तहरीर सौंप कर कार्रवाई की मांग की है। मुखानी थाना प्रभारी विजय मेहता का कहना है कि मामले में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है चोर जल्दी ही पुलिस की गिरफ्त में होगा।

जगदीश
कलर लैब
टंडन फोटो स्टूडियो
पासपोर्ट फोटो तुरन्त प्राप्त करें
जनरेटर सुविधा भी उपलब्ध है।
मोबाइल, विवाह, डिजिटल कैमरा, पेन ड्राइव, सीडी आदि डिजिटल कार्य तुरन्त करवायें।
काशीपुर बाईपास रोड,
गुरुनानक कन्या इण्टर कालेज के सामने गली नं. रुद्रपुर
E-mail: jagdishcolorlab@gmail.com
Web: jagdishcolorlab.com
05944-246817

शबद कीर्तन में किया प्रतिभाग

रूद्रपुर (उद संवाददाता)।श्री गुरु नानक देव प्रकाशोत्सव के अवसर पर गोल मार्केट स्थित गुरुद्वारा गुरु सिंह सभा में शबद कीर्तन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हिमांशु गाबा, उत्तराखंड प्रदेश महिला कांग्रेस कमेटी की वरिष्ठ उपाध्यक्ष, मीना शर्मा, कांग्रेस प्रदेश प्रवक्ता सौरभ चिलाना, पूर्व कांग्रेस प्रदेश प्रवक्ता अनिल शर्मा सहित अन्य लोगों ने गुरूद्वारे में चल रहे शब्द कीर्तन में प्रतिभाग किया।बाद में गुरु सिंह सभा गोल मार्केट द्वारा श्री गाबा, श्रीमती शर्मा, श्री चिलाना, और अनिल शर्मा का नगर कीर्तन में सहयोग के लिए धन्यवाद किया गया । इस अवसर पर बड़ी संख्या में अन्य लोग उपस्थित थे ।

क्या अंग्रेजी दवाईयां आपका रोग ठीक करने में नाकाम हैं तो मिलें-
विजय आयुर्वेद क्लीनिक
पंचकर्म सेन्टर
निम्न रोगों के इलाज में 16 वर्षो का अनुभव:-
पार्किंसन्स, अल्जाइमर, मानसिक विकार,निःसन्तान स्त्री-पुरुष की सभी चिकित्सायें, ट्यूब ब्लॉक, सिस्ट, कीटाणु की कमी आदि। डिस्क प्रोलेप्स सर्वाइकल, गठिया, घुटने का दर्द,किडनी रोग (डायलिसिस से पहले)
लीवर सिरोसिस, हैपेटाइटिस B&C, Fatty Liver प्रोस्टेट रोग
असाध्य एवं लाइलाज रोगियों की चिकित्सा शुद्ध आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा की जाती है।
DR. VIJAY PRAKASH MISHRA
M.D. (Ayurveda)
Mob.: 9410897970
DR. ASHWINI MISHRA
M.D. (Ayurveda)
स्त्री एवं त्वचा रोग
मिलने का समय : प्रातः 11:00 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक (शुक्रवार अवकाश)
होटल राजश्री के सामने, गली नं0 2, डॉक्टर्स कालोनी
डी । डी 2 सिविल लाईन, रूद्रपुर (ऊधम सिंह नगर) उत्तराखंड

हर वर्ष आयोजित होगा जनजातीय विज्ञान महोत्सव : सीएम

प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान के तहत उत्तराखण्ड के 128 जनजातीय गांवों का चयन

देहरादून(उद संवाददाता)। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने शुक्रवार को ओ.एन.जी.सी स्टेडियम, देहरादून में राज्य जनजातीय शोध संस्थान द्वारा आयोजित आदि गौरव महोत्सव कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने विज्ञान के क्षेत्र में जनजातीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिये प्रतिवर्ष जनजातीय विज्ञान महोत्सव आयोजित कराए जाने की घोषणा की। जिसके लिये उत्तराखण्ड जनजातीय शोध संस्थान को आवश्यकता अनुसार धनराशि उपलब्ध कराई जाएगी।मुख्यमंत्री ने आदि गौरव महोत्सव में विभिन्न राज्यों से आए जनजातीय समाज के लोगों से मुलाकात कर उनकी संस्कृति को जाना। कार्यक्रम में देश भर से प्रतिभाग कर रहे विभिन्न जनजातियों के कलाकारों ने लोक नृत्यों की प्रस्तुति की। साथ ही मुख्यमंत्री ने जनजातीय समाज द्वारा लगाए गए विभिन्न स्टालों का अवलोकन किया एवं जनजातीय समाज के लोक नृत्य में भी सम्मलित हुए।इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने बिरसा मुंडा जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने आदि गौरव

महोत्सव के आयोजन हेतु राज्य जनजाति शोध संस्थान का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम जनजातीय कलाकारों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर एंव गैर जनजातीय समुदाय को भी जनजातीय समाज की कला एवं संस्कृति से अवगत कराने का कार्य करेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने एकलव्य मॉडल स्कूल के बजट को 21 गुना तक बढ़ाने का ऐतिहासिक कार्य किया है। प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान के तहत उत्तराखण्ड के 128 जनजातीय गांवों का चयन किया गया है। इन चयनित गांवों में बुनियादी सुविधाओं का विकास, आर्थिक सशक्ति करण, बेहतर शिक्षा व्यवस्था और स्वस्थ जीवन को बढ़ावा दिया जाएगा। राज्य सरकार भी प्रदेश के आदिवासी एवं जनजातीय समुदाय को अनेकों सुविधाएं देकर उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाने की दिशा में कार्य कर रही है।मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखण्ड में 4 एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय संचालित हो रहे हैं। जिसमें जनजातीय समुदाय के छात्रों को निशुल्क शिक्षा एवं हॉस्टल की सुविधा मिलती है। जनजातीय समाज के बच्चों को प्राइमरी स्तर से स्नातकोत्तर स्तर तक छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। अनुसूचित जनजाति की पुत्रियों की शादी हेतु 50 हजार का अनुदान प्रदान किया जा रहा है। जनजाति क्षेत्रों में अवस्थापना सुविधाओं का विकास तेजी से किया जा रहा है। जनजातीय संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु प्रतिवर्ष राज्य जनजातीय महोत्सव तथा खेल महोत्सव आयोजित किये जा रहे हैं। जनजातीय शोध संस्थान के लिये घ्। करोड़ के कार्पस फण्ड की भी व्यवस्था की गई है।उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जनजातीय समाज का विकास सुनिश्चित किया गया है। वर्ष 2021 में प्रधानमंत्री जी ने प्रत्येक वर्ष 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी। जिसे हमारी सरकार भी हर वर्ष प्रदेश में अत्यंत धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मना रही है। राज्य सरकार, उत्तराखण्ड में आदिवासी समाज के विकास के लिए सदैव संकल्पित होकर कार्य करती रहेगी। इस अवसर पर विधायक सविता कपूर, सचिव श्री नीरज खैरवाल, अपर सचिव श्री संजय सिंह टोलिया एवं अन्य लोग मौजूद रहे।

जनजातीय गौरव दिवस पर बहुउद्देश्यीय शिविर आयोजित

भाजपा सरकार में हर वर्ग का हो रहा विकासः पाण्डेय

बाजपुर(उद संवाददाता)। बिरसा मुंडा के 150वें जयंती वर्ष पर बाजपुर विकास खण्ड कार्यालय परिसर में जनजातीय गौरव दिवस समारोह के उपलक्ष्य में मेगा इवेन्ट/बहुउद्देश्यीय शिविर आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विधायक गदरपुर अरविन्द पाण्डेय, जिलाध्यक्ष भाजपा गुँजन सुखीजा, पूर्व दर्जा राज्यमंत्री राजेश कुमार, उपजिलाधिकारी राकेश तिवारी से साथ जनजातीय समुदाय की

महिलाओं द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा जनता को वर्चुअल माध्यम से सम्बोधित किया गया। कार्यक्रम में विधायक गदरपुर अरविन्द पाण्डेय ने सम्बोधित करते हुए कार्यक्रम में आये सभी को जनजातीय दिवस की बधाई व शुभकामनाऐं दी। उन्होने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने विगत दस वर्ष के कार्यकाल में जनजातीय जनजातीय भाई-बहनों के उत्थान के लिए अनगिनत योजनाऐं लागू की जिससे जनजातीय समुदाय के लोग आगे बढ़े, उनका आर्थिक, सामाजिक विकास हो। उन्होने कहा कि अपने कार्यकाल में प्रधानमंत्री मोदी ने लड़खडाऐं देश को स्वावलम्बी बनाने का कार्य किया है जिसके लिए मै उनका धन्यवाद करता हूं। उन्होने कहा कि यह सब जनता जनार्दन की वजह से सम्भव हो पाया है, क्योंकि आपने सही नेता का चुनाव किया जिस कारण आज देश मजबूत हो रहा है। उन्होने कहा कि जिस जनजातीय लोगों को लोग उपेक्षित समझते थे, उचित सम्मान नही मिलता था, उनका शोषण होता था, लेकिन आज आपके वोट की ताकत आज ऐसे सभी भाईयों-बहनों को उचित सम्मान दिलाने का काम हमारी सरकार ने किया। उन्होने कहा कि जनजातीय समुदाय के बच्चों का पढ़ाई के साथ-साथ सर्वागीण विकास के लिए गदरपुर के हेमपुर में बुक्सा जनजाति के सम्मान में श्रद्धेय राजा जगत सिंह के सम्मान में बहुउद्देशीय क्रीड़ा भवन का निर्माण हमारी सरकार ने किया है ताकि हमारे बच्चे खेल के माध्यम से पुलिस, सेना में जाये या खेल जगत में मेडिल लाकर अपना भविष्य बना सके। उन्होने कहा कि जनजातीय समुदाय के बच्चों के लिए कूल्हा क्षेत्र में आवासीय छात्रावास के लिए स्वीकृति मिल गई है जो शीघ्र ही बन कर तैयार हो जायेगा, इसके लिए उन्होंने प्रदेश के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का धन्यवाद ज्ञापित किया और क्षेत्रवासियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार लगातार समाज के हर वर्ग के लिए कार्य कर रही है। कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष भाजपा गुंजन सुखीजा ने अपने सम्बोधन में कहा कि बिरसा मुंडा जी का जीवन हम सबको प्रेरणा देने का काम करता है। उन्होंने कहा कि बिरसा मुंडा जी ने 25 वर्ष की अल्पायु में समाज के लिए बहुत काम किया है। उन्होंने कहा कि हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी भी वही काम कर रहे है। उन्होने कहा कि हम सभी को सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं से जनजातीय समाज को अधिक से अधिक लाभ मिले इसके हम सभी को प्रयास करना होगा। इस दौरान पूर्व दर्जा मंत्री राजेश कुमार, सदस्य अनुसूचित जनजाति अयोग बाबू सिंह तोमर व नोडल अधिकारी कार्यक्रम/डीपीआरओ टिहरी गढ़वाल एन एम खान ने अपने विचार रखें। जिला समाज कल्याण अधिकारी ने बताया कि बाजपुर क्षेत्र से जनजातीय समाज की दो महिलाऐं शीला व राजवती मुख्य कार्यक्रम स्थल जमुई (बिहार) में अपने समूह के उत्पाद की स्टॉल लगाकर शामिल हुई जिनसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनके उत्पाद की जानकारी भी ली। कार्यक्रम में स्वास्थ्य विभाग द्वारा विरमा देवी, जसविन्दर सिंह एवं रविन्दर सिंह को आयुष्मान कार्ड व समाज कल्याण विभाग द्वारा आशा रानी व लक्ष्मी को कान की मशीन वितरित किये गये। कार्यक्रम में स्वास्थ्य, कृषि, सहकारिता, पेयजल, महिला एवं बाल विकास, समाज कल्याण, डेरी विकास, उद्यान, राजस्व, आयुर्वेद, होम्योपैथिक, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, शिक्षा, मत्स्य, पशुपालन, एनआरएलएम आदि समस्त विभागों द्वारा स्टॉल लगाए गए। विभिन्न विभागों द्वारा स्टॉल लगाकर क्षेत्रीय जनताओं को सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी गई व योजनाओं से लाभान्वित किया गया। इस दौरान जिलाध्यक्ष भाजपा गुँजन सुखीजा, पूर्व दर्जा राज्यमंत्री राजेश कुमार, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ मनोज शर्मा, उपजिलाधिकारी राकेश तिवारी, जिला समाज कल्याण अधिकारी अमन अनिरुद्ध, जिला प्रोबेशन अधिकारी व्योमा जैन, प्रभारी जिला कार्यक्रम अधिकारी आशा नेगी, जिला उद्यान अधिकारी प्रभाकर मिश्रा, जिला पर्यटन अधिकारी लता आर्या, जिला पूर्ति अधिकारी विपिन कुमार, मुख्य कृषि अधिकारी अभय सक्सेना, मण्डल अध्यक्ष भाजपा बिट्टू चौहान आदि मौजूद थे।

प्रकाशोत्सव पर गुरमत समागम में संगत हुई निहाल

हल्द्वानी (उद संवाददाता)। साहिब श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य मे रामलीला मैदान में कीर्तन दरबार एवं गुरमत समागम का आयोजन किया गया। मुख्य ग्रंथी भाई जगपाल सिंघ ने समूह संगत व सेवक परिवार की तरफ से रखे गए अखंड पाठ साहिब की सम्पूर्णता करी। जिसके बाद रामलीला ग्राउंड में गुरु ग्रंथ साहिब जी की अरदास कर प्रकाश करके गुरमत समागम का आरंभ किया। सबसे पहले हजूरी रागी भाई मोहन सिंघ एवं साथियो ने कीर्तन की शुरुवात की। उपरन्त शहर के अलग-अलग गुरुद्वारों के रागी जत्थों, श्री गुरु तेग बहादुर पब्लिक स्कूल एवं खालसा स्कूल के छात्रों ने गुरुबानी का गायन किया। हेड ग्रंथि ठाकुर सिंघ, गुरद्वारा गुरुनानकपुरा ने कथा विचार किया ।उसके बाद दरबार साहिब से आए भाई गुरदेव सिंघ वेरका एवं साथियों ने 'कल तारण गुरु नानक आया' 'मारया सिक्का जगत विच, नानक निर्मल पंथ चलाया' एवं 'सतगुरु की सेवा सफल है जे को करे चित लाए' आदि शबदों का गायन कर संगत को निहाल कर दिया। उपरन्त अमृतसर से आये प्रचारक वीर हरप्रीत सिंघ जंडयाला' ने गुरु साहिब के जीवन से जुड़े वर्तान्त बताए और कहा कि गुरु नानक देव जी ने अपना सारा जीवन

मानवता की भलाई और परोपकार के साथ समाज को सामाजिक कुरितियाँ एवं भ्रामक कर्मकांडों से बाहर निकालने में लगाया। गुरु जी ने हमेशा जात- पात, धर्म एवं ऊँच -नीच के दिखावटी बंधन को तोड़ कर एक ईश्वर की उपासना करने का संदेश दिया एवं सरबत के भले का सन्देश दिया। गुरु साहिब ने लंगर प्रथा का आरम्भ कर बराबरी का संदेश दिया जो आज तक कायम है जिसमें राजा और रंक एक ही पंगत में बैठ कर लंगर ग्रहण करते हैं। गुरु साहिब की शिक्षाओं के चलते सिख पंथ हमेशा ही मानवता के भले के लिए तत्पर रहता है चाहे वह विश्व के किसी भी कोने में दैविय आपदा हो या अन्य कोई समस्या। हर सिख उस प्रभु के आगे दोनों वक्त सुबह शाम अरदास में ये बोल बोलता है' नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाड़े सरबत दा भला। उसके बाद भाई शौकीन सिंघ हजूरी रागी श्री दरबार साहिब ने कीर्तन की हाजरी भरी।उन्होंने ऐसे सतगुर को बल जाईये व कल तारन गुर नानक आया आदि शब्दों से संगतं को निहाल कर दिया। पंडाल में सिख मिशनरी कालेज, हल्द्वानी सर्कल द्वारा गुरु नानक देव जी के जीवन एवं गुरुबाणी से सम्बंधित विषयों की प्रतियोगिता एवं प्रदर्शनी का स्टाल लगाया गया था। सभी उम्र की संगत ने इसमें भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान गुरु का लंगर चलता रहा जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने लंगर छका। सिख सेवक जत्थे की तरफ से पानी एवं लस्सी का स्टाल,अकाल पुरख की फौज की तरफ से सूजी के हलुआ का स्टाल ,निडर खालसा जत्थे की तरफ से फ्रूट रायता का स्टाल लगाया गया। कार्यक्रम का संचालन जगजीत सिंघ एवं अमरजीत सिंघ आनंद ने किया।जगजीत सिंघ ने गुरु के लंगर के लिए दिए गए सहयोग के लिए समूह संगत, परिवारो का धन्यवाद करा वही रामलीला कमेटी, नगर प्रशासन, पुलिस प्रशासन एवं समूह सेवादारों का धन्वाद करा। अमरजीत सिंघ ने गुरु साहिब के दर्शन करने आयी संगत को बधाई देने के साथ जो गणमान्य आये उन सभी का ,सहयोगी संस्थाओं एवं सेवादारों का एवं समूह साध संगत इलाका निवासियों का आभार प्रकट किया। अंत में गुरु के वजीर भाई जगपाल सिंघ ने अरदास करके कार्यक्रम का समापन जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल जयघोष के साथ किया। उपरन्त गुरु महाराज का पावन स्वरूप सुखासन करके समूह संगत व श्री सुखमनी सोसाइटी के मेम्बरों की तरफ से पुष्प वर्षा करते हुऐ गुरद्वारा साहिब निजस्थान में ले जाया गया। समूह संगत ने गुरु का लंगर छका व गुरु साहिब का धन्यवाद करा। इस दौरान वीरेंद्र सिंघ चड्ढा, रंजीत सिंघ आनंद, कवलजीत सिंघ, अमरजीत सिंघ सेठी, अमरजीत सिंघ बिंद्रा, अमरीक सिंघ आनंद, नरेंद्रजीत सिंघ रोड्डू, अमनपाल सिंघ, सोहन सिंघ, रविंदरपाल सिंघ राजू, तजिंदर सिंघ, बलविंदर सिंघ आनंद, जसवंत सिंघ, रविंदरपाल सिंघ शंटी, अमनपाल सिंघ लवी, जगमोहन सिंघ राजू, मनप्रीत सिंघ, प्रिंस कोहली, जसपाल कोहली, परमजीत सिंघ शंटी, बबली वीरजी, बबलू कुकरेजा, सतपाल सिंघ, बलबीर सिंघ मारवाह, दिवान चंद, हरविंदर सिंघ बबलू, परमजीत सिंघ पम्मा, कवलजीत सिंघ बबली, सनु नरूला, अमरजीत सिंघ साहनी ,प्रभजोत सिंघ रिंकल, हरप्रीत सिंघ, सुरजीत सिंघआदि ने सहयोग किया।

बालिका छात्रावास में चलाया जागरूकता कार्यक्रम

रूद्रपुर। जिलाधिकारी एवं मुख्य विकास अधिकारी के निर्देशानुसार नेताजी सुभाष चंद्र बोस राजकीय आवासीय बालिका छात्रावास गदरपुर में जागरूकता अभियान कार्यक्रम चलाया गया जिसमें बाल कल्याण समिति सदस्य श्रीमती पुष्पा पानू चाइल्ड हेल्प लाइन से केंद्र समन्वयक चांदनी रावत,केस वर्कर दीपा मेहरा द्वारा अभियान की शुरुआत गीतों के माध्यम से की गई। छात्रों को बाल अधिकार, पोक्सो एक्ट, बाल श्रम, बाल विवाह,

शिक्षा का अधिकार अधिनियम,किशोर न्याय अधिनियम बताया एवं चाइल्ड हेल्प लाइन नंबर 1098 व बच्चों को इसकी पूरी जानकारी दी गई व पुलिस हेल्प लाइन नंबर 112 व गुड टच, बेड टच,साइबर क्राइम नम्बर-1930 की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। शिक्षा का महत्व बालिकाएं अपने स्वास्थ्य का ध्यान कैसे रखे इस पर विस्तारपूर्वक बातचीत की गई बालिकाओं द्वारा अपनी अपनी समस्याएं बताई जिसमें वार्डन को हॉस्पिटल दिखाने का सुझाव दिया गया है इस अभियान में विद्यालय के अध ीक्षिका श्रीमती रेनू सिंह एवं स्टाप शामिल रहे।अभियान में 112 बालिकाएं उपस्थिति रहे।विद्यालय स्टाफ का पूर्ण सहयोग रहा।

गुरूद्वारा गोल मार्केट में ठुकराल को किया सम्मानित

रूद्रपुर(उद संवाददाता)। गोल मार्केट रुद्रपुर स्थित गुरूद्वारा श्री सिंह सभा में श्री गुरूनानक देव जी का प्रकाश पर्व पर पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल को ग्रुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी ने स्मृति चिन्ह एवं गुरु का प्रसाद भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर पूर्व विधायक ठुकराल को सभी को प्रकाश पर्व की बध ाई देते हुए कहा कि श्री गुरूनानक देव जी ने समूचे विश्व को मानवता का संदेश देकर सही पर चलने की सीख दी थी। उनके बताये मार्ग पर चलकर ही जीवन का उद्धार हो सकता है। इस अवसर पर

गुरूद्वारा श्री सिंह सभा के प्रधान सरदार जोगिंदर सिंह, गुरमीत सिंह, अजमेर सिंह ,राम सिंह बेदी, जीत सिंह चाचू, गुरपाल सिंह रोजी, तजेंद्र सिंह लाटू,,तेजेंद्र सिंह खरबंदा , सरनजीत सिंह, गुरदीप सिंह गाबा, रशपाल सिंह हैप्पी, हरजीत सिंह विरदी, सतनाम सिंह हुंदल, बलजीत गाबा,अजीत पाल सिंह, संजय ठुकराल, संजीव गुप्ता, विकास बंसल, कमल, ललित सिंह बिष्ट आदि लोग मौजूद थे।

हादसे रोकने के लिए बनेगी सड़क दुर्घटना सुरक्षा नियमावली

सीएम ने अधिकारियों को दिये नियमावली बनाने के निर्देश

देहरादून (उद संवाददाता)। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अधि कारियों को सड़क दुर्घटना सुरक्षा नियमावली बनाने के निर्देश दिए हैं। सीएम ने यह निर्देश पिछले दिनों मरचूला और राजधानी देहरादून में हुई भीषण सड़क दुर्घटना की गंभीरता को देखते हुए दिए। इसके लिए उन्होंने विशेषज्ञों और अनुभवी लोगों की एक समिति गठित करने को कहा है। माना जा रहा कि गठन के बाद समिति सड़क दुर्घटना सुरक्षा नियमावली का ड्राफ्ट तैयार कर सरकार को सौंपेगी। मुख्यमंत्री शुक्रवार को मुख्यमंत्री आवास में शासन के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक कर रहे थे। उन्होंने सड़क दुर्घटनाओं की संख्या में हो

रही वृद्धि पर चिंता जाहिर की। कहा, दुर्घटनाएं रोकने को सरकार के स्तर पर हर संभव प्रयास किए जाएं। ऐसे उपाय हों, ताकि दुर्घटनाओं होने से रोका जा सके। सूत्रों के मुताबिक, जल्द ही समिति का गठन होगा, जिसमें परिवहन, लोनिवि, पुलिस, आपदा प्रबंधन, स्वास्थ्य समेत कई अन्य विभागों के अनुभवी अफसरों को शामिल किया जाएगा। बैठक में प्रमुख सचिव आरके सुधांशु, सचिव शैलेश बगोली, गढ़वाल कमिश्नर विनय शंकर पांडेय, अपर पुलिस महानिदेशक, एपी अशुंमन और उपाध्यक्ष एमडीडीए बंशीध र तिवारी उपस्थित थे। राजधानी समेत राज्य के कई इलाकों में रातभर शराब की दुकानें और बार खोलने की शिकायतों का भी मुख्यमंत्री ने संज्ञान लिया। उन्होंने बेहद सख्त अंदाज में कहा, शराब की दुकानें व बार निर्धारित समय तक ही खुलें। नियमों की अनदेखी करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। इसके लिए उन्होंने सतत निगरानी करने के निर्देश दिए। कहा, रात्रिकालीन गश्त के दौरान एल्कोमीटर संग जांच और ओवर स्पीड के खिलाफ कार्रवाई की जाए। जन सुरक्षा से जुड़े सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं। मुख्यमंत्री धामी ने देहरादून से गौचर और चिन्यालीसौड के लिए फिक्स्ड विंग एयरक्राफ्ट चलाने के निर्देश दिए। उन्होंने संचालन के लिए शीघ्र निविदा और अन्य सभी औपचारिकताएं पूरी करने के निर्देश दिए। बैठक में बताया गया कि जौलीग्रांट स्थित देहरादून एयरपोर्ट से चिन्यालीसौड व गौचर के लिए एयरक्राफ्ट संचालन का ईओआई करने की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

वाहन चोरों ने उड़ाई दो मोटरसाईकिलें

रूद्रपुर (उद संवाददाता)। वाहन चोरों ने दो अलग अलग स्थानों से दो मोटरसाईकिलें चोरी कर लीं। समीर बरोई पुत्र सुभाष बरोई निवासी गोविन्द नगर, ट्रांजिट कैम्प,का कहना है कि उसने दीपावली के पर्व पर मैन मार्केट सी ब्लॉक ट्रांजिट कम्प में रोड़ के किनारे बर्तन की दुकान लगा रखी है। 30 अक्टूबर को रात्रि उसने अपनी मोटर साईकिल संख्या यूके 06एपी 3985 को अपनी बर्तन की दुकान के पास वाली गली में खड़ा कर लॉक लगा दिया था।31अक्टूबर को सुबह देखा उसकी बाइर्कक स्थान पर नहीं थी जो कि अज्ञात चोर द्वारा चोरी कर ली गयी है। वहीं फैजान खान पुत्र नाजिम अली खान निवासी किच्छा का कहना है कि 28 अक्टूबर को उसकी मोटर साईकिल संख्या यूके 06 एवाई 2708 को ऐक्सिस बैंक, नैनीताल रोड के सामने से अज्ञात व्यक्ति द्वारा चोरी कर ली गयी है। पुलिस ने दोनों मामलों की रपट दर्ज कर ली है।

हादसे में घायल ट्रक चालक की उपचार के दौरान मौत

गदरपुर(उद संवाददाता)। गत सप्ताह नौ नवंबर की रात्रि में अज्ञात कार की टक्कर से घायल हुए ट्रक ड्राइवर की इलाज के दौरान मौत हो गई। परिजनों की तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपी कार चालक के खिलाफ केस दर्ज किया है ।प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम भैर पुरा खजूरिया,भोजीपुरा, बरेली निवासी आरिफ खान ट्रक चालक था। 9 नवंबर को आरिफ खान, सहायक इब्ने हसन के साथ ट्रक लेकर बाजपुर से काशीपुर गया था। रात करीब 9 बजे वह मसीत में माईनिंग कंपनी के चेक पोस्ट पर जांच कराने के लिए जा रहा था इस बीच पीछे से आई तेज रफ्तार कार ने जोरदार टक्कर मार दी। इसके बाद चालक मय कार फरार हो गया । आरिफ खान को इलाज के लिए बरेली के राममूर्ति अस्पताल ले जाया गया जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई । आरिफ खान के पिता जुल्फेकार अली ने गदरपुर पहुंचकर थाना पुलिस को तहरीर सौंपी । तहरीर के आधार पर पुलिस ने अज्ञात कार चालक के खिलाफ धारा 106(एक)एवं 281के तहत केस दर्ज कर लिया है । पुलिस के अनुसार सीसीटीवी कैमरों की मदद से आरोपी कार चालक की खोज की जा रही है ।

उत्तरांचल दर्पण सम्पादकीय

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

विद्यार्थियों का भविष्य

उत्तर प्रदेश में विद्यार्थियों के आंदोलन के आगे सरकार को झुकना पड़ा है तो जाहिर है कि परीक्षाओं के आयोजन से संबंधित उनकी मांगें उचित थीं। हैरानी की बात है कि उत्तर प्रदेश लोकसेवा आयोग के पास इतना बड़ा तंत्र होने के बावजूद उसके प्रतियोगिता परीक्षाओं के आयोजन पर सवाल उठते हैं, उसके प्रश्न-पत्र भी बार-बार लीक हो जाते हैं। नतीजतन, उसे परीक्षाएं रद्द करनी पड़ती हैं। अगर विद्यार्थी एक दिन में या एक पाली में परीक्षाएं कराने की मांग कर रहे हैं, मानकीकरण के पैमाने पर सवाल उठा रहे हैं, तो इस पर विचार करने में सरकार को इतनी देर लगाने की जरूरत क्यों पड़ी? परीक्षा के जिन पहलुओं के बारे में आयोग को पहले से पता होना चाहिए था, वे उसे आंदोलन के बाद क्यों समझ में आए? क्या आयोग को अपनी सुविधा से अधिक परीक्षा की पारदर्शिता और विद्यार्थियों के भविष्य की चिंता नहीं करनी चाहिए? फिलहाल आयोग ने विद्यार्थियों की मांगों पर सकारात्मक फैसला लेकर एक जरूरी कदम उठाया है। इतना साफ है कि आयोग ने अपना फैसला बदला है, तो विद्यार्थियों की मांगों के पीछे ठोस आधार था। हालांकि आरओ और एआरओ परीक्षा टाले जाने और इसके लिए एक समिति बनाने के निर्णय से छात्र निराश हैं। दरअसल यह तय नहीं है कि समिति इस मसले पर अपनी रपट कब देगी। इसलिए ऐसा लगता है कि विद्यार्थियों और आयोग के बीच अभी गतिरोध बना रहेगा। सरकार प्रतियोगी परीक्षाओं और उनके परिणाम को लेकर अभ्यर्थियों या विद्यार्थियों से धैर्य रखने की उम्मीद करती है। मगर विद्यार्थी भी यह अपेक्षा करते हैं कि परीक्षाओं में शुचिता कायम रहे और ये बार-बार रद्द न हों या पर्चाफोड़ जैसी स्थितियां पैदा न हों। जब ऐसा नहीं होता तो उनके भीतर क्षोभ पैदा होता है। इस बार विद्यार्थी इसलिए भी नाराज थे कि परीक्षाएं दो पालियों में हो रही थीं और वे प्रारंभिक परीक्षा एक ही दिन कराने की मांग पर अडिग थे। उन्हें यह भी लग रहा था कि 'नार्मलाइजेशन' के फार्मूले से उन्हें काफी नुकसान होगा और बहुत कुछ आयोग के हाथ में चला जाएगा। वैसे भी यह प्रक्रिया जटिल है। इस समूचे मामले में आयोग की जो भी दलील हो, लेकिन इसकी आड़ में उसे लाखों युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ नहीं करना चाहिए।

पांच नए शहरों के लिए शुरू होगी हवाई सेवा

देहरादून। प्रदेश के जौलीग्रांट और पंतनगर एयरपोर्ट से पांच शहरों के लिए सीधी हवाई सेवा शुरू करने की तैयारी है। इसके लिए उत्तराखंड नागरिक उड्डयन विकास प्राधिकरण ने टेंडर प्रक्रिया शुरू कर दी है। हवाई सेवाओं का विस्तार होने से पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। जौलीग्रांट एयरपोर्ट से भोपाल, पटना, पंतनगर से मुंबई, कोलकाता, चेन्नई के लिए हवाई सेवा संचालित करने के लिए यूकाडा ने एविएशन कंपनियों से आवेदन मांगे हैं। प्रदेश में पर्यटन के साथ ही औद्योगिक निवेश के मकसद से निवेशक उत्तराखंड आते हैं। लेकिन, अभी तक मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, भोपाल के लिए सीधी हवाई सेवा नहीं है। इसे देखते हुए प्रदेश सरकार अब नए शहरों को हवाई सेवा से जोड़ने का प्रयास कर रही है।

हिमालयी क्षेत्र सबसे अधिक प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित

देहरादून। हिमालयन सोसायटी ऑफ जियोसाइंटिस्ट और आपदा प्रबंधन विभाग के अंतर्गत संचालित उत्तराखण्ड भूस्खलन न्यूनीकरण एवं प्रबंधन केंद्र (यू.एल.एम.एम.सी) के संयुक्त तत्वावधान में पर्वतीय क्षेत्रों में जोखिम मूल्यांकन और चुनौतियां विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि सचिव, आपदा प्रबंधन एवं पुनर्वास श्री विनोद कुमार सुमन ने कहा कि आपदाओं के लिहाज से उत्तराखण्ड समेत अन्य हिमालयी राज्य बेहद संवेदनशील हैं और यहां की संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि आपदा के तीन चरण होते हैं, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण चरण आपदा पूर्व तैयारी का है। आपदाओं का सामना करने के लिए हमारी जितनी अच्छी तैयारी होगी, प्रभाव उतना ही कम होगा। चाहे मानव संसाधनों की क्षमता का विकास करना हो, चाहे खोज एवं बचाव से संबंधित आधुनिक उपकरण क्रय करने हों, अर्ली वार्निंग सिस्टम पर काम करना हो, यह सबसे उपयुक्त समय होता है। उन्होंने कहा कि आपदाओं का सामना करने के लिए गोल और रोल दोनों स्पष्ट होने जरूरी है। भारत सरकार ने आईआरएस सिस्टम बनाया है, जिसे अपनाकर यह दोनों लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड में विभिन्न आपदाओं से लड़ने में रिस्पांस टाइम कम हुआ है। हम पिछले दस साल की आपदाओं का अध्ययन कर रहे हैं, जिससे यह पता चल सके कि हमने कहां बेहतर किया और कहां कमियां रहीं, ताकि भविष्य में आपदाओं से लड़ने के लिए बेहतर प्लानिंग की जा सके। यू.एस.डी.एम.ए के अपर मुख्य कार्यकारी अधिकारी-क्रियान्वयन डीआईजी श्री राजकुमार नेगी ने कहा कि आपदा प्रबंधन सिर्फ एक विभाग का कार्य नहीं है। अलग-अलग विभाग एक साथ, एक मंच पर आकर एक लक्ष्य की पूर्ति के लिए कार्य करते हैं और वह लक्ष्य है कम से कम जन-धन की हानि हो। अधिक से अधिक जिंदगियों को बचाया जा सके। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड में आपदा प्रबंधन में आधुनिकतम तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है और उत्तराखण्ड

राज्य को आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में मॉडल स्टेट के रूप में देखा जाता है। हिमालयन सोसायटी ऑफ जियोसाइंटिस्ट के अध्यक्ष तथा पूर्व महानिदेशक जी.एस.आई श्री आर.एस. गरखाल ने कहा कि हाल के वर्षों में हिमालयी क्षेत्र सबसे अधिक प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित हुआ है। इस सम्मलेन का उद्देश्य विभिन्न चुनौतियों के प्रति अपनी समझ को बढ़ाना और जोखिमों को प्रभावी रूप से कम करने के लिए रणनीति विकसित करना है। यू.एल.एम.एम.सी के निदेशक श्री शांतनु सरकार ने कहा कि यू.एल.एम.एम.सी विभिन्न केंद्रीय संस्थानों के साथ मिलकर आपदा सुरक्षित उत्तराखण्ड के निर्माण की दिशा में कार्य कर रहा है। प्रमुख पर्वतीय शहरों के संपूर्ण जियो टेक्निकल, जियो फिजिकल तथा जियोलॉजिकल अध्ययन की दिशा में कार्य किया जा रहा है। साथ ही लिडार सर्वे भी किया जा रहा है। जो भी डाटा मिलेगा उसे रेखीय विभागों के साथ शेयर किया जाएगा, ताकि वे उसके अनुरूप कार्य कर सकें। उन्होंने कहा कि एन.डी.एम.ए ने उत्तराखण्ड में 13 ग्लेशियल झीलें चिन्हित की हैं, जिनमें से पांच अत्यंत जोखिम वाली हैं। उनका भी अध्ययन किया जा रहा है, ताकि भविष्य में उनसे होने वाले संभावित जोखिम को कम किया जा सके। इस मौके पर देशभर में विभिन्न बांधों के निर्माण में सराहनीय योगदान के लिए श्री सुभाष चंद्र गुप्ता को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड, मुंबई-पुणे एक्सप्रेस हाइवे पर महज तीन साल में नौ किमी लंबी टनल बनाने वाली एजेंसी के प्रतिनिधि श्री सुरेश कुमार को बेस्ट टनलिंग अवार्ड तथा श्री एस.के. गोयल को बेस्ट माइक्रोपाइलिंग अवार्ड से सम्मानित किया गया। सम्मेलन के संयोजक श्री बी.डी. पाटनी ने कहा कि हिमालयी राज्यों के सामने दो नई चुनौतियों ने दस्तक दे दी है। एक है लैंडस्लाइड डैम और दूसरा खतरा हैं ग्लेशियर झीलें। अगर समय रहते इन्हें कंट्रोल नहीं किया गया तो भविष्य में ये बड़ी त्रासदी का सबब बन सकती हैं। उन्होंने कहा कि हमारे बुजुर्गों का हिमालय संरक्षण को लेकर पारंपरिक ज्ञान बहुत उच्चकोटी का था। पहले लोग नदी से पांच सौ मीटर ऊपर घर बनाते थे और आज नदी किनारे बसने की होड़ से मची है। होटल हों, कैंप, घर या बाजार, भविष्य में सबसे बड़ा खतरा इन्हीं को है। उन्होंने नैनीताल के बलियानाला समेत राज्य के अन्य प्रमुख भूस्खलन क्षेत्रों में उपचार के प्रभावी तरीके भी सुझाए।सी.बी.आर.आई के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. डीपी कानूनगो ने कहा कि आपदा के बाद राहत और बचाव कार्य करने में हमने महारत हासिल कर ली है, लेकिन हमें आपदा से पूर्व की तैयारियों को लेकर काफी कुछ करना और सीखना है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक समुदाय को यदि कहीं कोई आपदा का खतरा महसूस होता है, तो उन्हें बिना किसी भय के मजबूती के साथ अपनी बात को शासन-प्रशासन के सम्मुख रखना चाहिए, ताकि वे सही समय पर सही एक्शन ले सकें। कम्यूनिकेशन गैप नहीं होना चाहिए। इसके साथ ही गोदावरी रिवर मैनेजमेंट बोर्ड के पूर्व चेयरमैन श्री एच.के साहू तथा श्री राघवेंद्र कुमार गुप्ता ने बांधों की सुरक्षा पर व्याख्यान दिया। उन्होंने डैम सेफ्टी एक्ट के विभिन्न प्रावधानों के बारे में जानकारी दी। आई.आई.टी रुड़की के वैज्ञानिक डॉ. एसपी प्रधान ने हिमालयी राज्यों में स्लोप कटिंग के विभिन्न पहलुओं तथा उनके उपचार पर प्रकाश डाला।

प्रयागराज में महाकुंभ 2025 की भव्य तैयारियां

संगम नगरी प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर 12 बरसों के बाद 13 जनबरी से 26 फरबरी तक लगने बाले महाकुंभ मेले को लेकर उत्साह और तैयारियां चरम पर हैं। यह धार्मिक आयोजन दुनिया की सबसे बड़ी तीर्थ यात्रा मानी जाती है। ऐसा माना जाता है कि इस पवित्र जल में डुबकी लगाने से सभी पाप धुल जाते हैं, धरती पर पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति मिलेगी और मोक्ष मिलता है। कुंभ का इतिहास और उसकी महता के बारे में स्कंद पुराण और वालमीकि रामा यण में उलेख मिलता है। कुंभ मेले की शुरुआत की कहानी पौराणिक कथाओं में समुद्र मंथन की कथा से जुड़ी हुई जिसके के अनुसार जब देवताओं और असुरों ने अमृत प्राप्त करने के लिए समुद्र मंथन किया तो उस मंथन से अमृत का घट निकला। अमृत को पाने के लिए देवताओं और असुरों के बीच युद्ध छिड़ गया। जिसके चलते भगवान विष्णु ने अपने वाहन गरुड़ को अमृत के घड़े की सुरक्षा का काम सौंप दिया। गरुड़ जब अमृत को लेकर उड़ रहे थे, तब अमृत की कुछ बूंदें चार स्थानों हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयागराज में गिरी जोकि अमरता का अमृत थीं। तभी से हर 12 वर्ष बाद इन स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन होता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार माना जाता है कि पहले कुंभ का आयो जन राजा हर्षवन के शासनकाल में ;664 इसा पूर्व में आरम्भ किया गया था जिसका उल्लेख चीनी यात्री हुएगसांग ने अपनी यात्रा बिबरण में किया है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार बृहस्पति के कुम्भ राशि में और सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर हरिद्वार में गंगा के किनारे पर कुंभ का आयोजन किया जाता है। जबकि बृहपति के मेष राशि में प्रवेश होने तथा सूर्य और चंद्र के मकर राशि में होने पर अमावस्य के दिन प्रयागराज में त्रिवेणी संगम तट पर कुंभ का आयोजन किया जाता है। तीसरा कुंभ बृहपति एवं सूर्य के सिंह राशि में आने पर नासि क में गोदावरी के किनारे पर कुंभ का आयो जन हो ता है और बृहपति के सिं ह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रवेश होने पर उजैन में शिप्रा नदी के तट पर कुंभ का आयोजन होता है। प्रयागराज में महाकुंभ की शुरुआत 13 जनवरी 2025 को पौष पूर्णिमा स्नान के साथ होगी, और इसका समापन 26 फरवरी 2025 को महाशिवरात्रि के अंतिम स्नान के साथ होगा। महाकुम्भ का पहला स्नान 13 जनवरी 2025, दिन सोमवार, पौष पूर्णिमा से शुरू होगा।. पौष पूर्णिमा पर्व का विषेश महत्व शास्त्रों में वर्णित है। इस दिन से माघ मास के पवित्र स्नान का सुभारम्भ होता है। संगम के पवित्र जल में प्राणदायिनी शक्ति विद्यमान है। महाकुम्भ का दूसरा स्नान 14 जनवरी 2025, मंगलवार के दिन मकरसक्रांति के पावन पर्व पर आयोजित किया जायेगा। । सूर्य के राशि परिवर्तन कर मकर राशि में प्रवेश का उत्सव मकर संक्रांति है। धर्मषास्त्रों के अनुसार इस दिन स्नान, पुण्य, दान, जप, धार्मिक अनुश्ठानों का विशेष महत्व है। महाकुम्भ का तीसरा स्नान 29 जनवरी 2025,दिन बुधवार, मौनी अमावस्या . माघमास में आयोजित किया जायेगा। मौनी अमावस्याए माघ के महीने का सबसे बड़ा स्नान पर्व है। मौनी अमावस्या का स्नान अन्य सभी स्नान पर्वों में सर्वोत्तम कहा गया है। मौनी अमावस्या के विषेश पुण्यकाल पर स्वयं का उद्धार तथा पितरों को तारने के लिए दान, पुण्य, स्नान का विषेश विधान शास्त्रों में वर्णित है। महाकुम्भ का चौथा स्नान 03 फरवरी 2025,,दिन सोमवार बसंत पंचमी को आयोजित किया जायेगा।. बसंत पंचमी के दिन विद्या की देवी मां सरस्वती की पूजा के पीछे कई मान्यताऐं हैं। इस दिन मां सरस्वती का स्मरण, पूजन एवं मां

सरस्वती के नाम से स्नान, दान कर ध्यान करने से अंत:करण में स्थित सरस्वती जिह्वा पर विराजमान हो जाती हैं। महाकुम्भ का पांचवा स्नान 12 फरवरी 2025, दिन बुधवारए माघी पूर्णिमा के दिन आयोजित किया जायेगा। . इस दिन स्नान.ध्यान करने से मनोकामनाएँ तो पूर्ण होती ही हैं, साथ ही मोक्ष भी मिलता है। माघी पूर्णिमा पर चन्द्रमा अपनी अमृतमयी रष्मियों से पृथ्वी जल में विषिश्ट तत्वों का संचार करता हैए जो आमजनमानस का कश्ट निवारक बन जाता है।महाकुम्भ का अंतिम स्नान 26 फरवरी 2025 दिन बुध वार महाशिवरात्रि .के दिन आयोजित किया जायेगा। इस बार महाकुंभ में 40 करोड़ से ज्यादा श्रद्धालुओं और देशी विदेशी पर्यटकों के आने का अनुमान है। योगी सरकार ने न सिर्फ देश में बल्कि अंतर्राष्ट्रीय ट्रैवल एक्सपो में भी इसकी ब्रांडिंग की महाकुंभ में देश विदेश से आने वाले पर्यटकों को शहर और कुंभ क्षेत्र में पर्यटन से जुड़ी जानकारी के लिए कहीं भटकना नहीं पड़ेगा। पर्यटन विभाग की तरफ से कुंभ मेला क्षेत्र के बाहर 10 अस्थाई पर्यटन सूचना केंद्रों की स्थापना की जा रही है। शहर के सभी रेलवे स्टेशनए बस स्टेशन और अस्थाई बस स्टेशन में इनकी स्थापना की जा रही है। प्रयागराज मेला प्राधिकरण के मुताबिक मेले का क्षेत्रफल बढ़कर 4000 हेक्टेयर कर दिया गया है। कुल 25 सेक्टर में मेला बसाया जाएगा। जिसमें सर्किट हाउस की संख्या 3 से बढ़कर 5 कर दी गई है। महाकुंभ मेले में 25000 लोगों के लिए पब्लिक अकोमोडेशनए मोटरबोट, चेंजिंग रूम, पूजा स्थल और फ्लोटिंग जेटी बनाई जाएगी। मेले में इस बार 10 डिजिटल खोया पाया केंद्र भी बनेंगे। पहली बार यमुना नदी के वीआईपी घाट पर पक्के घाट का निर्माण कराया जा रहा है। महाकुंभ के दौरान लगभग 2ए000 पेइंग गेस्ट् रूम्स तैयार करने का लक्ष्य है। वर्तमान में सिर्फ 26 पेइंग गेस्ट रूम उपलब्ध हैं। इस योजना से शहरियों की आय भी बढ़ेगी और भक्तों को सस्ती सुविधाएं भी मिलेंगी। जिन घरों में 2 से 5 कमरे खाली हैं, वे भी पेइंग गेस्ट के रूप में रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। इसके लिए जिला पर्यटन कार्यालय में आवेदन देना होगा। जल्द ही ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन की सुविधा भी शुरू की जाएगी। ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इस योजना का हिस्सा बन सकें। सरकार की मंशा के अनुसार, पेइंग गेस्ट सेवा महाकुंभ के श्रद्धालुओं के लिए विशेष रूप से चलाई जा रही है। कम कीमत में बेहतर सुविधाओं का लाभ मिलने से गरीब भक्तों को राहत मिलेगी। पेइंग गेस्ट के कमरों का किराया और सुविधाएं निर्धारित मानकों के अनुसार तय की जाएंगी। यूपी राज्य पर्यटन विकास निगम ने पर्यटकों के लिए निर्धारित कीमत पर 14 पैकेज तैयार किए हैं। इसमें उनके घूमने, खाने.पीने, गाइड और दर्शन आदि की काफी सुविधा दी गई हैं। यातायात की समस्या को देखते हुए तेलियरगंज से संगम क्षेत्र तक 13 किलोमीटर का रिवर फ्रंट भी बनाया जा रहा है। इसके साथ ही वर्ष भर के घाटों पर जल का प्रवाह बना रहे इसके लिए ड्रेजिंग भी शुरू कर दी गई है। इसके साथ ही महाकुंभ से जुड़ी अन्य परियोजनाओं में सड़कों और चौराहों का चौड़ीकरण व सौंदर्यीकरण किया जा रहा है। कई फ्लाई ओवर भी बनाए जा रहे हैं। प्रयागराज जंक्शन रेलवे स्टेशन और एयरपोर्ट का विस्तार भी किया जा रहा है। यूपी की योगी आदित्यनाथ सरकार महाकुंभ 2025 को भव्य और दिव्य बनाने के लिए तेजी से काम कर रही है। पूरे शहर को सजाया और संवारा जा रहा है। इसके साथ ही, महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए खास इंतजाम किए जा रहे हैं। पुलिस के साथ. साथ हर जगह टेक्नोलॉजी के जरिए सुरक्षा को और मजबूत किया जाएगा। महाकुंभ में सुरक्षा के लिए सबसे अहम भूमिका आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित सीसीटीवी कैमरों की होगी। पूरे शहर में 2500 से ज्यादा सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे जिनमें से कई एआई तकनीक से लैस होंगे। ये कैमरे सीधे कंट्रोल रूम से जुड़े रहेंगे जिससे हर गतिविधि पर नजर रखी जा सकेगी। कुंभ मेला की तैयारियों में रेल मंत्रालय कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती है। 2025 में यूपी के प्रयागराज में लगने वाले कुंभ मेला में देशभर से लोग पहुंचेगे और ऐसे में रेलवे पर यात्रियों का अतिरिक्त भार पड़ेगा। कुंभ मेले के लिए रेलवे ने 933 करोड़ रुपये का बजट इन्फ्रास्ट्रक्चर और दूसरी सुविधाओं के लिए रखा है। इसके अलावा भारतीय रेलवे 992 स्पेशल ट्रेनों को चलाने की योजना भी बना रही है। कुंभ में आने वाले तीर्थ यात्रियों को आवाजाही में परेशानी ना हो, इसे सुनिश्चित करने के लिए रेल मंत्रालय प्रयागराज डिवीजन और इसके आसपास के एरिया में करीब 3700 करोड़ रुपये की लागत से रेलवे ट्रैक्स को डबल करने पर काम कर रहा है। रेलवे ट्रैक बिछाने का मकसद कुंभ मेला में ट्रेनों की आसान आवाजाही है।

-डॉक्टर गिरधारी लाल महाजन
लेखक स्वतन्त्र पत्रकार हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया जनजातीय गौरव दिवस

देहरादून(उद संवाददाता)। राजभवन में जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें देश की विविध जनजातीय संस्कृतियों की अनूठी छटा देखने को मिली। इस कार्यक्रम में उत्तराखण्ड की जौनसारी और भोटिया जनजाति के लोगों के साथ-साथ अरुणाचल प्रदेश, झारखण्ड, त्रिपुरा और नागालैण्ड की जनजातियों ने अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से अपनी समृद्ध परंपराओं और लोक नृत्य का मनमोहक प्रदर्शन किया। इन प्रस्तुतियों में जनजातीय समुदायों की संस्कृति की जीवंतता और उनकी परंपराओं की विविधता को प्रस्तुत किया गया, जिसे दर्शकों ने अत्यंत उत्साह और सराहना के साथ देखा। इस अवसर पर झारखण्ड राज्य का स्थापना दिवस भी मनाया गया जिसमें झारखण्ड के निवासियों ने प्रतिभाग कर सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हुए राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक विविधता में जनजातीय समाज का महत्वपूर्ण योगदान है, जिनकी अपनी विशिष्ट बोली, खान-पान और पहनावा है। उन्होंने जनजातीय समाज के साहस, समर्पण, और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली की प्रशंसा की, साथ ही उन योद्धाओं को भी याद किया जिन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष किया और हमारी समृद्ध विरासत की रक्षा की। उन्होंने जनजातीय समाज से वन संपदा के संरक्षण और जलवायु परिवर्तन के प्रति उनके दृष्टिकोण से प्रेरणा लेने का आग्रह किया। राज्यपाल ने उत्तराखण्ड की जनजातियों के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि माननीय राष्ट्रपति जी द्वारा राज्य की जनजातीय समुदाय से मुलाकात भी की गई थी, जिससे वे बहुत प्रभावित हुईं। उन्होंने आर्थिक रूप से सशक्त होने और सामूहिक प्रयासों से जनजातीय उत्थान की आवश्यकता पर जोर दिया, और शिक्षा एवं रोजगार में उन्हें सहयोग देने की जिम्मेदारी को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में जनजातीय समुदाय के उत्थान के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक सशक्तीकरण में विशेष प्रयास किए जा रहे हैं।इस दौरान राज्यपाल ने झारखण्ड राज्य स्थापना दिवस की बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह दिन हमें झारखण्ड की अद्भुत प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध खनिज संसाधनों, और अद्वितीय सांस्कृतिक धरोहरों पर गर्व महसूस कराता है। उन्होंने कहा कि "एक भारत-श्रेष्ठ भारत" की सोच के तहत प्रत्येक राज्य के स्थापना दिवस को अन्य राज्यों में भी मनाने की पहल सराहनीय है। इस प्रकार के कार्यक्रम भारत की सांस्कृतिक विविधता के साथ ही राष्ट्रीय एकता की भावना और आपसी समझ को बढ़ा रहे हैं। इस अवसर पर सचिव डॉ. नीरज खैरवाल, अपर सचिव श्री राज्यपाल स्वाति एस. भदौरिया, निदेशक जनजाति कल्याण संजय टोलिया, अपर निदेशक योगेंद्र रावत, उप निदेशक जनजातीय कल्याण भारत सरकार राहुल कुमार, समन्वयक राजीव कुमार सोलंकी सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

डीएम ने की जल जीवन मिशन के कार्यों की समीक्षा

अल्मोड़ा(उद संवाददाता)। जिलाधिकारी आलोक कुमार पांडेय ने गत दिवस जल जीवन मिशन से संबंधित अधिशाषी अभियंता, सहायक अभियंता एवं कनिष्ठ अभियंता समेत अन्य संबंधित अधिकारियों के साथ जल जीवन मिशन के कार्यों की समीक्षा की। इस दौरानजिलाधिकारी ने अधूरी योजनाओं एवं कार्यों को लेकर अधिकारियों से उनकी समस्याएं जानी तथा उनके समाधान के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिए जिन योजनाओं में अपेक्षित प्रगति नहीं मिली उनके प्रति जिलाधिकारी ने नाराजगी जाहिर करते हुए संबंधित अधिकारियों को सख्त हिदायत दी कि अगर निर्धारित समय में कार्य पूरे नहीं हुए तो कार्रवाई के लिए तैयार रहें। इस दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि जिन मामलों में वन भूमि हस्तांतरण की प्रक्रिया होनी है वह पोर्टल के माध्यम से जल्द की जाए। उन्होंने कहा कि वन भूमि हस्तांतरण के प्रकरणों को पोर्टल पर अपलोड करते हुए

सभी नियमों एवं प्रक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए नियमों का पालन करें। जिलाधिकारी ने कहा कि जिन योजनाओं में विवाद की स्थिति है वहां प्रशासन को अवगत करते हुए प्रकरणों का समाधान करें। जिन कार्यों में ठेकेदारों द्वारा लापरवाही की जा रही है वहां ठेकेदार के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करेंबैठक में मुख्य विकास अधिकारी दिवेश शाशनी, अधीक्षण अभियंता एवं नोडल अधिकारी जल जीवन मिशन दीपक मालिक समेत अन्य संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

अधूरी तैयारियों के साथ खेल कैंप शुरू

देहरादून(उद संवाददाता)। शासन ने राष्ट्रीय खेलों के कैंप 15 नवंबर से आयोजित करने का आदेश पत्र तो जारी कर दिया, लेकिन कैंप में सरकार की ओर से सहयोग करने वाले सभी जिलों के खेल अधिकारी (डीएसओ) देहरादून में चल रहे युवा महोत्सव में तैनात हैं। अन्य जिलों में कैंप तो लग रहे हैं, लेकिन डीएसओ की गैरमौजूदगी और निर्णयों के अभाव में व्यवस्थाएं आधी-अधूरी हैं। इस कारण तीन खेलों के कैंप ऐन मौके पर शिफ्ट करने पड़े हैं। सवाल उठ रहे हैं कि जब कैंपों की व्यवस्था ही लड़खड़ा रही है तो खिलाड़ियों का चयन और प्रशिक्षण कैसा होगा। 150 रुपये में होटल कहां मिलता है? अभी तक खिलाड़ियों के खाने और रहने के भत्तों से संबंधित पिछले शासनादेश में संशोधन भी लंबित है। राज्य में अभी भी साल 2021 का शासनादेश प्रभावी है, जिसके अनुसार राष्ट्रीय खेलों में भाग लेने वाले हरेक खिलाड़ी को 250 रुपये पूरे दिन के खाने का भत्ता और 150 रुपये होटल का भत्ता देने का प्रावधान है। सवाल है कि इतने कम रुपयों में कैसे राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी गुजारा कर सकते हैं। इसलिए खाने का भत्ता 480 और रहने का भत्ता 800 रुपये करने का संशोधन भेजा गया है, जिस पर अभी तक अनुमति नहीं मिली है। 800 रुपये भत्ता मिलता है तो दो खिलाड़ी मिलकर एक रूम शेयर कर सकते हैं। हरिद्वार, देहरादून, रुद्रपुर और हल्द्वानी में कैंप लगाने की तैयारी कर रहे खेल संघों का कहना है कि सभी जिला खेल अधिकारी बीती नौ नवंबर से देहरादून में युवा महोत्सव और स्पोर्ट्स साइंस की कार्यशालाओं में व्यस्त हैं, जिसकी वजह से कैंप लगाने संबंधी निर्णय होने में काफी मुश्किलें आई हैं। आखिरी समय में ताइक्वांडो का जो कैंप हल्द्वानी में लगना था, उसे बागेश्वर में शिफ्ट करना पड़ा है। मॉडर्न पेंटाथलॉन का कैंप हल्द्वानी से काशीपुर शिफ्ट किया है। तलवारबाजी का कैंप रुद्रपुर के स्टेडियम की जगह एक प्राइवेट स्कूल में शिफ्ट किया है। एक खेल संघ के पदाधिकारी ने कहा कि जैसे-तैसे कैंप लगाए जा रहे हैं, क्योंकि अभी भी खिलाड़ियों की कोचिंग शुरू नहीं करेंगे तो मेडल प्रभावित होगा।

पेज एक का शेष...

हादसे में दूल्हा दुल्हन....स्टेशन के पास ऑटो को पीछे से तेज गति से आ रही क्रेटा कार ने ऑटो को टक्कर मार दी । ऑटो भीषण टक्कर के बाद सामने खड़े बिजली के पोल से टकरा गया। जिसकी वजह से ऑटो में सवार सातों लोगों की मौके पर मौत हो गई। हादसा तब हुआ जब क्रेटा कार चालक घने कोहरे में ओवरटेक कर रहा था। हादसे में सात लोगों की मौत से परिवार में शादी की खुशियां मातम में बदल गयी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। मृतकों में 65 वर्षीय खुर्शीद पुत्र सद्दीक, दूल्हा 25 वर्षीय विशाल पुत्र खुर्शीद, दुल्हन 22 वर्षीय खुशी, हल्दौर थाना इलाके के गांव खारी निवासी मृतक खुर्शीद के साढ़ू 32 वर्षीय मुमताज, साली 28 वर्षीय रूबी पत्नी मुमताज, 11 वर्षीय बुशरा पुत्री मुमताज, जिला मुरादाबाद के कांठ थाना इलाके के गांव कासमपुर निवासी ऑटो चालक 45 वर्षीय अजब सिंह पुत्र धर्मपाल सिंह शामिल हैं। बताया गया है कि सड़क दुर्घटना में आरोपी कार चालक शेरकोट के कोटरा मोहल्ला निवासी अमन पुत्र इमरान, सुहेल पुत्र हबीब अली घायल हुए हैं। दोनों घायलों का एक निजी अस्पताल में इलाज कराया जा रहा है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने सड़क हादसे में हुई जनहानि पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने मृतकों के शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने संबंधित जिला प्रशासन के अधिकारियों को मौके पर पहुंचकर राहत कार्य में तेजी लाने और घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाकर उनके समुचित उपचार के निर्देश दिए हैं। साथ ही, घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी कामना की है।

शिक्षक को धोखे से ...धमकी दी। जिस पर उसने अपने रिश्तेदार से 1 लाख रूपये खाते में मंगाया तथा उक्त लोगों द्वारा अजय गुप्ता किच्छा रोड रम्पुरा वार्ड 6 रूद्रपुर के खातें में ट्रांसफर करवाया गया। उसके बाद फिर 1 लाख रूपये विवेक कुमार उर्फ विक्की बाठला ने आराध्य बाठला के खाते में ट्रांसफर करवाये इस तरह कुल रकम 3,65,000 रूपये हड़प लिये। उक्त लोग अभी भी पैसे की मांग कर रहे है और बोल रहे है कि अगर पुलिस में शिकायत की तो आपकी वीडियो वायरल कर देंगे और घर में घुसकर पूरे परिवार को जान से मार देंगे। जिससे वह अपना मानसिक संतुलन खो बैठा। उसे काशीपुर में निजी अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। पुलिस ने तहरीर के आधार पर आरोपियों के विरूद्ध विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सिरौली कला पर ..अदूरदर्शिता का ही नतीजा है कि है कि पहले सिरौली को नगर पंचायत बनाने का प्रयास किया, फिर किच्छा नगर पालिका का हिस्सा बनाया उसके उपरांत सिरौली कला को ग्राम सभा का दर्जा देने का प्रयास किया जिस पर उच्च न्यायालय द्वारा कानून सम्मत निर्णय दिया गया है। उन्होंने कहा कि किसी भी क्षेत्र का उन्नति होना संविधान की एक प्रक्रिया है जबकि वर्तमान उत्तराखंड सरकार द्वारा उन्नति के बजाय अवनति की ओर सिरौली कला को ले जाया जा रहा था, जिसका असर नगर पालिका की अन्य क्षेत्रों में भी पड़ रहा था। उन्होंने कहा कि जो लोग सिरौली को कभी नगर पंचायत कभी ग्राम सभा का सपना दिखा रहे थे, वह लोग वास्तव में संपूर्ण नगर पालिका क्षेत्र की जनता के साथ धोखा कर रहे थे। उन्होंने शासन प्रशासन को भी आड़े हाथों लेते हुए कहा कि जब माननीय उच्च न्यायालय द्वारा ग्राम सभा बनाए जाने पर रोक लगा दी गई है और क्षेत्र पुनः नगर पालिका का हिस्सा बन गया है तो सिरौली कला में साफ सफाई व निर्माण कार्य क्यों नहीं कराये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि नगर पालिका क्षेत्र के किसी भी भाग में विकास का ना होना शासन प्रशासन की कमजोरी है। उन्होंने कहा कि जब नगर पालिका कक्षा का विस्तार किया गया उसे समय क्षेत्र के कई हिस्से नगर पालिका में सम्मिलित किए गए जिसमें अधिकांश क्षेत्र कृषि भूमि था जबकि सिरौली कला आबादी क्षेत्र था जो कि नगर पालिका के मध्य में पड़ता था किंतु कुछ लोगों द्वारा विकास को दूर करने के लिए सिरौली को लेकर के वहां की जनता के साथ भ्रमित करने का प्रयास किया है जिसको सिरौली कला की जनता ने ही स्वयं खत्म कर दिया है। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ लोगों द्वारा सिरौली कला को ग्राम सभा बनाने को लेकर के दायर याचिकाकर्ताओं को डराने धमकाने का भी प्रयास किया किंतु सिरौली के लोगों द्वारा एकता का परिचय दिखाते हुए धमकियां को दरकिनार करते हुए न्यायालय की शरण में जाकर के न्याय की गुहार लगाई और न्यायालय द्वारा उनकी पीड़ा को सुना गया तथा सरकार द्वारा किए जा रहे असंवैधानिक कार्यों पर रोक लगा दी जा कि किच्छा क्षेत्र की जनता की जीत है। उन्होंने कहा कि न्यायालय ने जो आदेश पारित किया है वह असत्य पर सत्य की जीत है।

दुकान में आग से ..तुरंत उन्होंने 112 पर कॉल की इसके बाद फायर ब्रिगेड की गाड़ी मौके पर पहुंची। तब तक दुकान में आग विकराल रूप ले चुकी थी। दमकल ने आग को बमुश्किल काबू किया।सोमपाल के मुताबिक, दुकान में करीब 5 से 6 लाख रुपये का माल था, जो जलकर राख हो चुका है। वह पिछले दो साल से इस दुकान को चला रहे थे और अपने परिवार का पालन-पोषण इसी से कर रहे थे। वहीं घटना की सूचना मिलने पर रात को ही समाजसेवी संजय ठुकराल ने मौके पर पहुंचकर घटना की जानकारी ली और पीड़ित दुकानदार को ढांढस बंधाते हुए कहा कि उनकी हर संभव मदद करेंगे और नुकसान की भरपाई के लिए मदद दिलाने का प्रयास करेंगे।

डॉल्फिन श्रमिकों के...ही शासन प्रशासन व श्रम विभाग न्याय कर रहे हैं। जिसे बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। उन्होंने कहा कि आज कलैक्ट्रेट कूच कर प्रधानमंत्री से न्याय की मांग की जा रही है। यदि उन्हें निराशा मिली तो वह आन्दोलन को और तेज करने को बाध्य होंगे। गांधी पार्क से सैकड़ों लोग शासन प्रशासन, श्रम विभाग व फैक्ट्री प्रबंधन के विरूद्ध नारेबाजी करते हुए जुलूस की शक्ल में रवाना हुए। जुलूस मुख्य मार्ग से होकर गुजरता हुआ कलैक्ट्रेट पहुंचा जहां श्रमिकों ने प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन प्रेषित किया। इस दौरान आप नेता सतपाल ठुकराल, विमला देवी, लक्ष्मी, ममता, रेश्मा, रजनी, अर्चना, पिंकी, सोनू कुमार, बंटी, विक्की, रंजीत, ललित कुमार, सुनीता सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

नानक नाम जहाज..की ओर से शबद कीर्तन की स्वर लहरिया ऐसा दृश्य श्रद्धालुओं को आत्मिक शांति प्रदान कर रहा था। सबसे आगे पंच प्यारे चल रहे थे। गुरु ग्रंथ साहिब की पालकी को फूलों से सजाया गया था। नगर कीर्तन शहर के विभिन्न मार्गो में पहुंचा जहां श्रद्धालुओं ने मत्था टेक प्रसाद ग्रहण किया। रंजीत अखाड़े ने नगर कीर्तन में हैरतअंगेज कर्तव्य दिखाएं जिसे देखकर लोग दांतों के तले उंगलियां दबा गए। इस दौरान भाजपा नेता सुखदेव सिंह ने नगर कीर्तन में पहुंचकर सभी को सरोपा भेंट कर सम्मानित किया। इस मौके पर भाजपा जिला अध्यक्ष कमल जिंदल, सरदार गुरप्रीत सिंह देवल, ब्लॉक प्रमुख पति सरदार पलविंदर सिंह औलख, दलबीर सिंह, नरेंद्र सिंह बमराह, सरदार लक्खा सिंह, सरदार दीपा सिंह चौहान, गुरसेवक सिंह महार, सत्येंद्र दिवाकर, सोप्रीत बॉबी भाटिया, महेश मित्तल, सतीश उपाध्याय आदि मौजूद थे

कैंटर खाई में..निकाला गया और उसके घायल अवस्था में अस्पताल भर्ती कराया गया। जानकारी के अनुसार कैंटर वाहन हल्द्वानी से बागेश्वर की ओर सामान लेकर जा रहा था। निगलाट के पास अचानक वाहन अनियंत्रित होकर गहरी खाई में सड़क के नीचे पलट गया। वाहन में केवल चालक मौजूद था, जो केबिन में फंस गया था ।

गुरुनानक देव जी ने दिया करुणा न्याय और समानता का संदेश

देहरादून (उद संवाददाता)। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) ने शुक्रवार को गुरुनानक देव जी के 555 वें प्रकाश पर्व के अवसर पर रेसकोर्स, देहरादून स्थित गुरुद्वारे में मत्था टेककर प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि और खुशहाली के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर राज्यपाल ने गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व की बधाई देते हुए कहा कि उनकी शिक्षाओं में निहित 'इक ओंकार सत नाम' का मूल मंत्र एक गहन प्रेरणा स्रोत है। गुरुनानक देव जी की शिक्षाएं- करुणा, न्याय और समानता का संदेश देती हैं और समस्त मानवता का मार्गदर्शन करती हैं। उन्होंने कहा कि गुरु नानक देव जी की शिक्षाएं आज भी हमें समाज में समरसता और एकता बनाए रखने का मार्ग दिखाती हैं। उनके आदर्शों पर चलने से हमें जीवन के मूल तत्वों को समझने और आत्मिक शांति प्राप्त करने में सहायता मिलती है। उन्होंने गुरु नानक देव जी के व्यक्तित्व की चार विशेषताओं- साधारणता, करुणा, मासूमियत और नम्रता को जीवन में अपनाने का संकल्प लेने का आह्वान किया। राज्यपाल ने कहा कि उनके संदेश 'सब कुछ तेरा' और 'एकम' आज भी पूरे संसार के लिए प्रासंगिक हैं। इस अवसर पर प्रथम महिला श्रीमती गुरमीत कौर भी उपस्थित रहीं।

संस्थापक-स्व० हरनामदास सुखीजा एवं स्व०तिलकराज सुखीजा
स्वामित्वाधिकारी,प्रकाशक एवं मुद्रक परमपाल सुखीजा द्वारा उत्तरांचल दर्पण पब्लिकेशन्स, श्याम टाकीज रोड,रुद्रपुर,ऊधमसिंहनगर(उत्तराखण्ड)से मुद्रित एवं प्रकाशित
सम्पादक- परमपाल सुखीजा
आरएनआई नं.: UTTHIN/2002/8732 समस्त विवाद रूद्रपुर न्यायालय के अधीन होंगे।
E-mail-darpan.rdr@gmail.com,www.uttaranchaldarpan.in
फोन-245886(O)245701(Fax),9897427585,9897427586(Mob.)

पचास लाख तक के मूल्य की वस्तु व सेवाओं के उपभोक्ता केस सुन सकता है जिला उपभोक्ता आयोग

एड.नदीम उद्दीन की नया उपभोक्ता कानून पुस्तक जारी

काशीपुर(उद संवाददाता)। नये उपभोक्ता संरक्षण कानून के अनुसार अब पचास लाख तक की मूल्य वस्तु व सेवाओं के उपभोक्ता केस जिला उपभोक्ता आयोग ही सुन सकता है। इसमें मुआवजे या दावे की धनराशि कितनी भी हो सकती है। पांच लाख तक की वस्तु व सेवाओं के उपभोक्ता केसों पर कोई परिवाद शुल्क भी नहीं देना होगा। उक्त जानकारी कानूनी जागरूकता पुस्तकों के लेखक 33 वर्षों के अनुभवी अधिवक्ता नदीम उद्दीन (एडवोकेट) ने अपनी 46 वीं पुस्तक "नया सरल उपभोक्ता कानून" आम जनता के लिये जारी करते हुये दी। श्री नदीम द्वारा लिखित तथा युगनिर्माता पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित इस कानूनी जागरूकता पुस्तक "नया सरल उपभोक्ता कानून" में 11 अध्याय तथा एक विशेष परिशिष्ट है। इस पुस्तक में जहां सरल हिन्दी में प्रमुख उपभोक्ता कानूनों का परिचय दिया गया है। वहीं 20 जुलाई 2020 से लागू नये उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 के प्रावधानों की जानकारी दी गयी है। इसके अतिरिक्त उपभोक्ता शिकायत सम्बन्धी प्रावधानों का अंग्रेजी पाठ में विशेष परिशिष्ट के रूप में शामिल किया गया है। पुस्तक में उपभोक्ता कानूनों का परिचय, उपभोक्ता कानून सम्बन्धी प्राथमिक बाते, जिला आयोग की अधिकारिता व मामले की प्रक्रिया, राज्य आयोग व राष्ट्रीय आयोग की अधिकारिता व प्रक्रिया, अपील व रिवीजन, उपभोक्ता आयोगों का गठन, उपभोक्ता संरक्षण परिषदों, अपराध और सजाओं के साथ -साथ नये उपभोक्ता अधिनियम में नये जोड़े गये मध्यकता सम्बन्धी प्रावधान, उत्पाद दायित्व प्रावधान, उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण की सरल जानकारी वाले अध्याय शामिल किये गये हैं। श्री नदीम ने बताया कि पुस्तक को देश भर में कोई भी व्यक्ति कहीं से भी पब्लिकेशन की वेबसाइट तथा ऑमेजन के माध्यम से ऑनलाइन आर्डर करके घर बैठे मंगा सकता है। श्री नदीम की इससे पूर्व सूचना अधिकार, मानवाधिकार, उपभोक्ता अधिकार, भ्रष्टाचार, चुनाव , आयकर, वैट, जी.एस.टी. बी.एन.एस., फौजदारी कानून आदि विषयों पर 45 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

त्रियुगीनारायण मंदिर में सीएम ने की पूजा

रूद्रप्रयाग (उद संवाददाता)। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को त्रियुगीनारायण मंदिर में पूजा-अर्चना की। इसके बाद वह तीर्थ पुरोहितों के बीच गए और उनसे मुलाकात की। सीएम धामी केदारनाथ विस में सोनप्रयाग, त्रियुगीनारायण और अन्य स्थानों पर प्रचार को पहुंचे हैं। केदारनाथ विधानसभा सीट पर 20 नवंबर को वोटिंग होगी। 23 नवम्बर को मतगणना होगी। केदारनाथ फतह करने के लिए प्रदेश में भाजपा और कांग्रेस दोनों ही पार्टियों ने पूरा जोर लगाया हुआ है। सीएम धामी स्वयं मोर्चा संभाले हुए हैं। क्षेत्र भ्रमण कर वह लोगों से संपर्क कर रहे हैं। शनिवार सुबह वह त्रियुगीनारायण पहुंचे। जहां उन्होंने लोगों मुलाकात भी की। भाजपा ने मंडल से लेकर बूथ स्तर पर एक-एक कार्यकर्ता को जिम्मेदारी सौंपी गई है, जिसकी मॉनीटरिंग की जा रही है। जिला व ब्लॉक स्तर के सभी पदाधिकारियों को दूरस्थ गांवों में जनसंपर्क के लिए कहा है, जिनसे प्रतिदिन की रिपोर्ट मांगी जा रही है।

महिला ने पति पर मारपीट कर धमकाने का लगाया आरोप

रूद्रपुर (उद संवाददाता)। आवास विकास निवासी एक महिला ने अपने पति पर मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाते हुए रपट दर्ज कराई है। दर्ज रपट में आवास विकास शिव शक्ति मंदिर के पास की निवासी महिला का कहना है कि उसका विवाह 30 जनवरी 2015 में विपेंद्र कुमार गुप्ता उर्फ विक्की पुत्र महेंद्र पाल गुप्ता निवासी लोक विहार कालोनी रूद्रपुर से सम्पन्न हुआ था। विवाह के कुछ समय बाद उसका पति नशा करके मारपीट करने लगा तथा दहेज की मांग करने लगा। पति के साथ उसका भाई अनिल कुमार गुप्ता, मनोज कुमार गुप्ता व ससुर महेन्द्र पाल गुप्ता पुत्र राम भजन लाल गुप्ता उक्त विपेंद्र कुमार गुप्ता थे मारपीट करते थे जिस कारण परेशान होकर उसने उक्त ससुरालियों के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत कराया और अपनी नाबालिग पुत्री के साथ किराये के मकान में दुकान खोलकर अपना व अपनी पुत्री का भरण पोषण करती है। 6 नवम्बर 2024 को सांय उसका पति विपेंद्र उसकी दुकान में आया तथा गाली गलौच करते हुये उसे मारना पीटना शुरू कर दिया। जिस पर उसने 112 पर कॉल करके पुलिस को सूचना दी तो पुलिस के आने से पहले पति भागते समय धमकी देकर गया कि तुझे व तेरी बेटी को जान से मार दूंगा। महिला का कहना है कि उसके उक्त ससुराली उसके साथ कोई भी अप्रिय घटना घटित कर सकते है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

शादियों में यात्रियों को पर्याप्त बसें उपलब्ध करायी जाए: दीपक रावत

हल्द्वानी (उद संवाददाता)। मंडल आयुक्त एवं सचिव सीएम दीपक रावत ने क्षेत्रीय प्रबंधक, उत्तराखंड परिवहन निगम, काठगोदाम और टनकपुर को यात्रियों के लिए पर्याप्त संख्या में बस उपलब्ध कराने को कहा है। वर्तमान में

शादियों का समय होने के कारण यात्रियों की संख्या में काफी वृद्धि हो जाती है। इसलिए मार्गो में बसों की कमी न हो। आयुक्त रावत ने कहा कि यात्रियों की अधिक संख्या एवं मार्गों में पर्याप्त संख्या में बसें उपलब्ध न होने के कारण उपलब्ध बसों में ओवर लोडिंग होती है जिससे दुर्घटनाओं की संभावना बनी रहती है। इसको देखते हुए आयुक्त ने सभी डीएम को भी अपने स्तर से समीक्षा करने के निर्देश दिए है। जिन मार्गों में यात्रियों की संख्या में बढ़ोतरी की संभावना हो और बसें पर्याप्त संख्या में न हो। उन मार्गों में बसों की संख्या में बढ़ोतरी के संबंध में आवश्यक कार्यवाही करने को कहा है।

कल रुद्रपुर में आयोजित होगी 'ग्रेन्यूल्स ग्रीन हार्टफुलनेस रन'

एसएसपी व विधायक भी होंगे शामिल

रुद्रपुर(उद संवाददाता)। पर्यावरण एवं स्वास्थ्य जागरूकता के उद्देश्य को लेकर ग्रेन्यूल्स ग्रीन हार्टफुलनेस रन का आयोजन 17 नवंबर को रुद्रपुर के गांधी पार्क में किया जाएगा। यह दौड़ 1 किलोमीटर और 3 किलोमीटर की श्रेणियों में आयोजित की जाएगी, ताकि हर उम्र और फिटनेस स्तर के लोग इसमें भाग ले सकें। इस कार्यक्रम में विधायक शिव अरोरा और एसएसपी मणिकांत मिश्रा भी शिरकत करेंगे। आयोजकों ने बताया कि इस दौड़ का उद्देश्य हमें याद दिलाना है कि हमारे पर्यावरण को बचाना हमारे हाथ में है। साथ ही, यह एक अवसर है अपनी शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देने और मानसिक शांति को हासिल करने का। हर्टफुलनेस इंस्टीट्यूट द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम पद्मभूषण कमलेश डी पटेल (दाजी) की प्रेरणा से, एक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा बन चुका है, जो 160 से अधिक देशों में फैल चुका है। रूद्रपुर केन्द्र में इस कार्यक्रम का आयोजन केंद्र समन्वयक डॉ. सीमा अरोड़ा एवं युवा समन्वयक विवेक त्रिपाठी के निर्देशन में किया जा रहा है ।इस कार्यक्रम में स्पार्क मिंडा का सहयोग मिल रहा है ।इस आयोजन में भाग लेकर आप न केवल पर्यावरण का हिस्सा बनेंगे, बल्कि एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाएंगे।

तेंदुलकर की पत्नी और बेटी पहुंची परमार्थ निकेतन

ऋषिकेश। पूर्व भारतीय क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर की पत्नी अंजलि तेंदुलकर और पुत्री सारा तेंदुलकर परमार्थ निकेतन आश्रम पहुंचीं। उन्होंने परमाध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती से आशीर्वाद प्राप्त किया। साथ ही परमार्थ गंगा आरती में प्रतिभाग किया। परमार्थ निकेतन पहुंची अंजलि तेंदुलकर और सारा तेंदुलकर ने गंगा तट के शांतिपूर्ण वातावरण का आनंद लिया। उन्होंने गंगा आरती के अनुभव को साझा करते हुए कहा, यह एक अद्भुत अनुभव था। गंगा मां की आरती में शामिल होकर आत्मा को शांति और शुद्धि मिलती है। इस दिव्य आरती में प्रतिभाग कर वह धन्य महसूस कर रही हैं। अंजलि और सारा ने स्वामी चिदानंद के साथ चर्चा भी की। पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के समाधानों पर मंथन किया। उन्होंने परमार्थ निकेतन की ओर से संचालित कई सामाजिक और पर्यावरणीय परियोजनाओं के विषय में जानकारी ली।

स्वामी चिदानंद ने परमार्थ निकेतन की पर्यावरणीय पहल और गंगा स्वच्छता अभियान के विषय में विस्तार से समझाया। बताया, परमार्थ निकेतन का उद्देश्य केवल आध्यात्मिकता का प्रचार-प्रसार करना नहीं है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता के कार्यों में भी योगदान देना है। कहा, गंगा हमारी माता है और गंगा संरक्षण हमारा कर्तव्य है। हम सभी को मिलकर गंगा सहित अन्य नदियों की स्वच्छता और संरक्षण के लिए प्रयास करने चाहिए।

विधायक ने श्री राधा कृष्ण रासलीला का किया शुभारम्भ

रुद्रपुर(उद संवाददाता)। विधायक शिव अरोरा ने मोहनपुर न.1 में श्री राधा कृष्ण रासलीला का फीता काटकर शुभारम्भ किया। इस दौरान मोहनपुर पहुँचने पर क्षेत्रीय विधायक शिव अरोरा का श्री श्री राधा गोविन्द कमेटी ने अंग वस्त्र भेट कर स्वागत अभिनन्दन किया। विधायक शिव अरोरा कहा कि भगवान श्री कृष्ण राधा की यह रासलीला जो युगो युगो से चली आ रही है जिसको देख भगवान के सुंदर मनमोहक स्वरूप के दर्शन कर अंतर मन को शांति की अनुभूति होती है, विधायक बोले भगवान कृष्ण का जीवन ही भक्ति प्रेम सदभाव को दर्शाता है, हमको उनके जीवन को आत्मसात कर उनसे प्रेरणा लेकर समाजिक व व्यक्तिगत जीवन को जीना चाहिए, इस सुंदर आयोजन के लिये

विधायक शिव अरोरा ने सभी कमेटी के सदस्यों को शुभकामनायें दी।इस दौरान भाजपा जिला महामंत्री अमित नारंग, जिला पंचायत प्रतिनिधि जगदीश विश्वास, अशोक विश्वास, अशोक बजाज,ओमियों विश्वास , कालाचंद, राकेश बाला, सोमा विश्वास, सुशील बजाज,अपूर्व विश्वास, कालीपद, अमृतपाल सहित अन्य लोग मौजूद रहे।